ब्राह्मण जीवन हीरे-तुल्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
आबू पर्वत (राजस्थान)

ब्राह्मण जीवन – हीरे तुल्य

(ब्रह्माकुमार भ्राता निर्वैर जी के अनुभव)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
आबू पर्वत (राजस्थान)

द्वितीय संस्करण : नवम्बर, 2005

कापी संख्या : 5,000

प्रकाशक एवं मुद्रक:
साहित्य विभाग,
ओमशान्ति प्रेस, ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन, आबू रोड – 307 510
☎ – 228125, 228124

पुस्तक मिलने का पता:
साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501

कापी राइट:
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत – 307 501
राजस्थान, भारत ।

अमृत-सूची

1. खुशनसीब ब्राह्मण जीवन 07

2. बापदादा के साथ का अनुभव 14

3. निर्भयता 19

4. निश्चय की शक्ति 26

5. स्वमान व निर्माणता का सन्तुलन 34

6. बापदादा के समीप कैसे आएँ 46

7. मम्मा व बाबा के साथ के अनुभव 54

दो शब्द

मुझे एक बार पूछा गया कि क्या आपको कभी भी ऐसा लगा कि बाबा को अपना जीवन समर्पण करके कोई भूल कर दी! तो मैंने कहा कि नहीं, कभी नहीं। मुझे इस बात का दिल से बहुत गर्व है कि बाबा ने मुझे सेवाओं के काबिल समझा और मैं समझता हूँ कि हर ब्राह्मण भाई-बहन की ऐसी ही भावना होगी।

कहा जाता है कि जीवन ईश्वरीय सौगात है, इसे किसी उद्देश्य के अनुरूप अग्रसर किया जाना चाहिए। पूरे सृष्टि-चक्र में यह ब्राह्मण जीवन सबसे अधिक कीमती है। हमारे पास पवित्रता, ज्ञान, गुण, शान्ति आदि ऐसे मूल्यवान खजाने हैं जिनकी तलाश सारी दुनिया को है। हमें इस बात का सदा नशा रहे कि परमात्मा से हमारे व्यक्तिगत सम्बन्ध हैं, उनसे हमारा सीधा सम्पर्क है। अन्य लोग तो केवल उनकी प्रशंसा करते हैं, उनको ढूँढ़ते हैं पर हम उनसे सर्व प्राप्तियों का अनुभव करते हैं। टीचर, टीचर की शिक्षा, समय (संगमयुग) और व्यवस्था - इनके प्रति जितना दिल का प्यार और सम्मान होगा उतना हम निश्चयबुद्धि विजयन्ती बनते जायेंगे। रूहानी मार्ग में सरलता से आगे बढ़ने के लिए श्रीमत ही सर्वोच्च निर्देश हैं जो प्रकाश स्तम्भ की तरह कार्य करते हैं। हमें नशा है कि हमारे संबंध उस ईश्वरीय परिवार से हैं जो समाज के महानतम व सर्वश्रेष्ठ कार्य के प्रति प्रतिबद्ध है और हम भी साथ में निमित्त हैं। इस स्वमान के जाग्रत रहने से संगम की हर घड़ी सुखदायी बन जाएगी।

मुख्य बात है कि जैसे बाबा चाहें वैसे हमारे संकल्प हों, वैसी हमारी बुद्धि हो और वैसे ही हमारे संस्कार हों। यही है सबसे सुन्दर अनुभव जो हम कर सकते हैं। हम उस संगठन का हिस्सा हैं जो इस धरा पर स्वर्ग लाने के निमित्त है।

ब्राह्मण जीवन के हीरे तुल्य अनुभवों के बेहद सागर में से गागर भर अनुभव आप पाठकों के समक्ष इस पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। अनुभवों को पढ़ कर आप सभी भी ईश्वरीय नशे, अतीन्द्रिय आनन्द और उड़ती कला में उड़ें तो मेरा यह प्रयास सार्थक होगा। इन अनुभवों के माध्यम से आपको प्राणों से प्यारे, दिलों के सहारे साकार बापदादा की अनमोल दिव्य छवि और उनके दिव्य कर्मों की झलक मिले!

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

ब्रह्माकुमार निर्वैर

खुशनसीब ब्राह्मण जीवन

सभी ब्राह्मणों* से, जो क्रिसमस की सुहावनी वेला पर विश्व के चारों कोनों से आये हैं, मैं जानना चाहूँगा कि आपका, ब्राह्मण जीवन में ऐसा क्या अनुभव है जो आप लम्बी यात्रा करके और मुसीबतों का सामना करके मधुबन में आये हैं। मेरा पक्का मानना है कि यदि आपने अतीन्द्रिय सुख एवं खुशी का अनुभव नहीं किया होता, यदि आपको ज्ञान के अनमोल रत्नों का खज़ाना नहीं मिला होता तो आप इतनी गहरी ठंड के बावजूद यहाँ नहीं होते। जब विश्वास हो कि बर्फ से सने पहाडों के नीचे हीरे छिपे हुये हैं तभी कोई उस धरती को खोदने का प्रयास करता है। तो ऐसी अनोखी प्राप्ति यहाँ क्या है? हाँ, है, अवश्य एक चीज है – बापदादा से मुलाकात।

कहा जाता है कि जीवन ईश्वरीय सौगात है जिसे किसी उद्देश्य से अग्रसर किया जाना चाहिए। यह पवित्र ब्राह्मण जीवन इस सृष्टि-चक्र में सबसे कीमती है। माया से युद्ध के बावजूद ब्राह्मण जीवन हीरे-तुल्य है। विश्व के वे लोग जो सर्व स्थूल खज़ानों से भरपूर तथा सम्पूर्ण सुखी माने जाते हैं, उनकी तुलना में हमारे पास पवित्रता, गुण व ज्ञान ऐसे खजाने हैं जिनकी तलाश सारी दुनिया को है। आपकी तलाश तो पूरी हो गयी ना! या अभी

* इस पुस्तक में 'ब्राह्मण' शब्द प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान सुनकर मरजीवा जन्म लेने वाले ब्रह्माकुमार-कुमारी भाई-बहनों के लिए प्रयुक्त किया गया है।

भी जारी है? आपकी तलाश तो यहाँ पहुँचने के साथ ही पूरी हो गई। सबसे ऊँची बात तो यह है कि भगवान मिले, केवल साक्षात्कार मात्र ही नहीं बल्कि सन्मुख मिले।

सृष्टि की शुरूआत कैसे हुई, इसके बारे में चर्चा की जाती रही है परन्तु अभी तो इसके विनाश की बातें भी की जाने लगी हैं। ब्राह्मणों को यह स्पष्ट है कि यह विश्व सम्पूर्ण रूप से कभी भी विनाश होता नहीं। इस सृष्टि रूपी रंगमंच के आदि काल और परिवर्तन काल का स्पष्ट ज्ञान अन्तर्मन में स्थिरता पैदा करता है। मन में कोई भय नहीं रहता है। विनाश के समाचार जब कभी भी टी॰वी॰ या समाचार-पत्रों द्वारा देखने, सुनने, पढने को मिलते हैं तो आप कभी विचलित हो नहीं सकते क्योंकि आपको तो स्पष्ट है कि जो कुछ हो रहा है, वह एक बेहतर दुनिया लाने के लिए हो रहा है और वह नयी दुनिया एक बहुत लम्बे अर्से तक चलेगी। यह ज्ञान बहुत कीमती है। बाबा कहते हैं कि ज्ञान की ही कमाल है जो हम बच्चे डबल ताजधारी राजा-रानी बनते हैं।

वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए ज्ञान को बहुत कीमती माना जाता है परन्तु ईश्वरीय ज्ञान द्वारा जब मनजीत बन जाते हैं तब विज्ञान सहयोगी बनता है। बाबा कहते हैं कि स्वर्णिम युग में ये वैज्ञानिक विमान आदि बनाने की सेवा आप लोगों के लिये करेंगे। कहावत

है–मनजीते जगतजीत। आज वैज्ञानिकों को सबसे ज्यादा शक्तिशाली माना जाता है। वे विनाश के शक्तिशाली साधन अर्थात् हथियार आदि बनाते हैं। परन्तु बाबा कहते हैं कि इन शक्तिशाली साधनों द्वारा ये एक-दूसरे को नष्ट करने के निमित्त बनेंगे और उसके बाद जो स्वर्णिम दुनिया आएगी, वहाँ ऐसी चीजें बनेंगी जो पूर्ण सुरक्षित व सुखदाई होंगी। हम रूहानी वैज्ञानिक होने के नाते मन को जीतने की कला सीख चुके हैं जिस कला को युगों से अति कठिन माना जाता आ रहा है।

आप ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हो, आप बताइये कि क्या मन को जीतना संभव है? क्या हर समय संभव है? आखिर तो यह संभव होना ही है। बाबा के बच्चे होने के नाते हमें यह पता है कि धीरे-धीरे हमें विजयी बनना ही है। यदि 24 घण्टे नहीं तो 20 या फिर 16 या 10 घण्टे परन्तु धीरे-धीरे बढ़ना ही है। मन के युद्ध में हम इंच-इंच करके भी आगे ही बढ़ते रहते हैं क्योंकि हमें यह विश्वास है कि हमारी जीत निश्चित है। बाबा कहते हैं कि इस समय माया लगभग विदाई लिए हुए ही है, परन्तु हम बच्चे ही कभी-कभी उसे बुला लेते हैं। विजयी हम तभी बनेंगे जब हमारे संकल्प दृढ़ होंगे। बाबा कहते हैं कि दृढ़ता ही सफलता की कुन्जी है। जिस घड़ी आपको व्यर्थ या नकारात्मक संकल्प आये, आपको किसी-न-किसी की मदद लेनी चाहिए। यदि सर्व संबंधों की तार

एक बाबा से नहीं जुड़ी रहेगी और समझ नहीं होगी कि किससे मदद लेनी है तो दिन-रात कोशिश करने के बावजूद भी समाधान मिल नहीं सकेगा। बाबा हमें सहज बतलाते हैं कि जब भी कमजोर संकल्प आये तो सर्वशक्तिवान से संबंध जोड़ो। बाबा को सिक व जान से याद कर अपनी समस्या बाबा को सौंप दो तो वह छूमन्तर हो जायेगी।

यदि आप साहस व दृढ़ता से कदम बढ़ाते हैं तो बाबा की तुरन्त मदद मिलती है। विश्व की कोई भी सरकार इतनी जल्दी मदद नहीं देती। इस ईश्वरीय राज्य में कष्ट के लिए कोई स्थान नहीं है। ब्राह्मण जीवन में समस्या आती है तो सभी ब्राह्मण जानते हैं कि बाबा कैसे मदद करते हैं, परन्तु क्या आप बाबा से एक सेकण्ड में संबंध स्थापित कर सकते हो? ऐसा देखा गया है कि टेलिफोन, फैक्स में फिर भी समस्या हो जाती है, परन्तु यह रूहानी संचार व्यवस्था निर्विघ्न है। बिना टेलिफोन के भी सहज संचार हो जाता है। हमें इस बात को स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि दुनिया में जो-जो सर्वश्रेष्ठ बातें हैं, बाबा उन्हें पुन: हमें प्राप्त करवा कर एक नयी दुनिया का निर्माण कर रहे हैं। बाबा से हमें इतनी मदद मिलती है तो हमें बेहद खुशी में, शांत व हल्के होकर रहना चाहिए।

मुझे इस बात का अनुभव है कि बाबा और मम्मा की आँखों

से सम्पूर्ण वरदानी दृष्टि का अनुभव होता था। उनकी ऐसी वरदानी दृष्टि का अनुभव हम आज भी करते हैं। बाबा में ब्राह्मण जीवन की बहुत खुमारी थी। कोई भी नया कार्य करने में बाधाएँ तो आती ही हैं, परन्तु बाबा को यह पक्का विश्वास था कि यह कार्य उनका स्वयं का नहीं है, वो तो केवल निमित्त हैं। हमें भी फालोफादर करते हुए वैसा ही दृष्टिकोण रखना है तभी हम व्यस्तता के बावजूद मुक्त अवस्था का अनुभव कर सकते हैं।

हमारा यह खुशनुमा, स्वस्थ, रूहानी परिवार हमारे लिये अनुपम खज़ाना है। देखिये, कितने भाई-बहनें हैं और सभी रूहानी कमाई में लगे हुए हैं। जिस दिन से हम यह समझे हैं कि हम ब्रह्माकुमार-कुमारी हैं, हम कमाई के इस रूहानी धंधे में व्यस्त हैं। लाखों की कमाई हम रोज अमृतवेले करते हैं और फिर आपस में एक-दो को बाँटकर उसे कई गुणा बढ़ा लेते हैं। अमृतवेले की याद और फिर मुरली सुन कर हम अपने आपको कितने सम्पन्न व धनवान समझते हैं, ठीक उसी तरह जैसे कोई पौष्टिक व शक्तिशाली भोजन खाकर महसूस करता है। जब सभी यह अनुभव करें और सभी के चेहरों पर रूहानी मुस्कान छायी हो तो हम सोचते हैं कि कितने श्रेष्ठ अलौकिक परिवार से हमारा संबंध है। ऐसी सुव्यवस्था व निश्छल प्यार का अनुभव किसी भी नवागन्तुक को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता। जब कोई मधुबन आते हैं तो कहते हैं

बापदादा के साथ का अनुभव

आत्म अभिमानी बन कर रहना, यह साकार बाबा के जीवन का महत्त्वपूर्ण गुण था। इस पर बाबा सबसे ज्यादा जोर देते थे और अब भी बाबा इसके बारे में हर मुरली में बोलते हैं। बाबा में आत्मिक भाव किसी भी राष्ट्रीयता, जाति व रंग से ऊपर तथा सहज रूप से था। यद्यपि वो अभी एक बहन के तन में आते हैं फिर भी हम उनसे उसी आत्मिक भाव से मिलते हैं जैसे कि पहले मिलते थे।

बाबा ने हमें महत्त्वपूर्ण गुण 'पवित्रता' का अनुभव करवाया। बाबा कहते थे - पवित्रता जीवन का सर्वश्रेष्ठ गुण है। इसी गुण के आधार पर आप ब्राह्मण विश्व में सबसे ऊँचा पद प्राप्त करते हैं। पवित्रता ही आन्तरिक शान्ति एवं खुशी का आधार है। यद्यपि इस गुण की वजह से बहनों को, भारत में विशेष तौर से, बहुत मार खानी पड़ी परन्तु बाबा ने कभी भी इसके साथ समझौता करने की छुट्टी नहीं दी। बहुत आत्माएँ इसे धारण करने में प्रारम्भ में असुविधा अनुभव करती हैं परन्तु बाबा कहते थे कि पवित्रता ही हमारा मूल स्वभाव है।

बाबा की हमदर्दी पूरे विश्व के प्रति है। क्योंकि बाबा जानते हैं कि चाहे कितने भी भौतिक सुख प्राप्त हों, अन्दर से सभी खाली हैं।

बाबा समस्त विश्व को स्वस्थ, सम्पन्न व खुशनसीब बनाना चाहते हैं। त्रिमूर्ति के चित्र के नीचे सबसे पहले स्लोगन लिखा गया था - ''100% पवित्रता, शान्ति, सम्पन्नता, खुशी एवं निरोगी जीवन का सतयुगी स्वर्णिम राज्य, आप ईश्वरीय बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है - अब नहीं तो कभी नहीं।'' बाबा, ईश्वर से जो भी प्राप्त हुआ उसे एक कहावत में कहने की इच्छा रखते थे। जब भी कोई नया सेवाकेन्द्र खुलता था तो बाबा त्रिमूर्ति, कल्पवृक्ष व ड्रामा के चित्र की गिफ्ट देते थे। वे यह स्पष्ट जानते थे कि खुशी न होने का मुख्य कारण जीवन में आध्यात्मिकता की कमी है। उसके लिए आवश्यक हैं सुनने व देखने के साधन। हम जानते हैं कि 75% तो हम देख करके ही सीखते हैं। बाबा इस बात पर जोर देते थे कि जिनके पास भी धन है वो रूहानी युनिवर्सिटी या हॉस्पिटल खोलें। योग से सभी स्वस्थ हो सकते हैं और खुश रहने के लिए अच्छा स्वास्थ्य व धन दोनों की ही आवश्यकता होती है।

बाबा की मुरली अपने आप में एक सम्पूर्ण व्यवस्थित पाठ है। बाबा एक प्रश्न से शुरू करके उसे रोचक तरीके से समझाते हैं। और तब बाबा हमें बताते हैं कि हमें क्या करना चाहिए और अन्त में उस पाठ को दोहरा कर पक्का कराते हैं।

बाबा की दृष्टि सभी के प्रति विशेष थी चाहे गरीब हो या

अमीर और चाहे पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़। इससे हर आत्मा को बाप का बनके रहने में बहुत मदद मिलती थी। बहुत लोग बाबा के पास में 15 से 25 वर्ष की आयु में ही आ गए थे। इतनी ही उम्र के दौरान दादियों ने भी समर्पण किया। बाबा कहते थे कि ईश्वरीय संदेश देने के लिए बहुत कम वक्त है इसलिए साहसी युवाओं की आवश्यकता है। बाबा कहते थे कि सेवा के क्षेत्र में आने से ही हम मास्टर रचयिता बन सकते हैं।

अव्यक्त होने के पहले छः महीनों में बाबा ने सेवाओं के निमित्त विशेष निर्देश दिए। इसके बाद मैंने सेवाओं में नवीनता लाने का चिन्तन शुरू किया। अभी जिम्मेदारी लेने से ही आप भविष्य में पवित्रता व जिम्मेदारी के डबल ताजधारी बन सकते हैं। मास्टर ब्रह्मा स्वरूप आपका तब बनता है जब आप जिम्मेदारी लेते हैं। बाबा ने अपने समान कई आत्माओं को बनाया और बनाते रहेंगे। यही एक विशेष अन्तर है ब्रह्मा बाबा व अन्य गुरुओं में।

बाबा हमें सर्वदा सकारात्मक संकल्प ही देते थे और कहते थे कि जो कुछ भी होता है उसमें कल्याण समाया हुआ है। जो भी कुछ ऐसा-वैसा होता था तो बाबा यह कह कर खत्म कर देते थे कि ''यह कोई नई बात नहीं, यह तो कल्प पहले भी हुई थी'' परन्तु इनके साथ-साथ हमें सावधानी देते थे कि परिस्थितियों से सीख कर

भविष्य में सावधान रहना है। हर परिस्थिति में बाबा प्यार से सराबोर बोल ही बोलते थे और यही गुण हमें उनकी तरफ आकर्षित करता है। दस वर्ष के साकार साथ के अनुभव में मैंने बाबा को कभी गुस्सा व नाराजगी व्यक्त करते नहीं देखा। यदि कोई गलती करता था तो बाबा सावधानी देते थे। मुझे याद है कि एक बार मैं एक चित्र छपवाने का कार्य करवा रहा था। उस चित्र को बाबा दीवाली की गिफ्ट के रूप में देना चाहते थे। मैं और दादी जी मुम्बई में थे। मुझे चित्रों को मधुबन भेज कर संशोधित करवाना था और समय ज्यादा लग रहा था। इस पर बाबा ने मुझे बिना कोई कड़ी बात कहे, यही कहा कि छपवाने में काफी लम्बा समय लग गया है और बच्चा बेबी बुद्धि है। बाद में बाबा मधुबन से कोई अच्छी-सी टोली भेज कर हमारे मन को दुरुस्त करते थे। कभी-कभी भाई-बहनें जब बाबा से मिलने आते हैं तो बीती हुई गलतियों के बारे में सोचते रहते हैं और इस चिन्तन में उनके मिलने की खुशी गुम रहती है परन्तु बाबा इतनी शक्तिशाली दृष्टि देते थे कि उनके ये सब संकल्प एकदम उड़ जाते थे और बाबा का प्यार उन्हें सहज पवित्र वृत्ति में स्थित कर देता था।

बाबा का जीवन सरल व साफ सुधरा था। उन्हें सफेद चद्दर, पर्दे व कपड़े पसन्द थे। विदेश में रहने वाले भाई-बहनें जब बाबा के लिए सुन्दर कपड़े लाते थे तो बाबा केवल उनको खुश करने के

लिए एक-दो बार पहनते थे, बाद में गिफ्ट रूप में दे दिया करते थे। बाबा किसी को भी अपने पैर छूने नहीं देते थे। यदि कोई पैसा देना चाहता था तो बाबा उसे मम्मा के पास भेज देते थे। मम्मा तुरन्त नहीं लेती थी परन्तु देने वाले की आर्थिक स्थिति पहले देखती थी। यदि मम्मा देखती थी कि उनकी वापसी यात्रा के लिए यह पैसा आवश्यक है तो उनको अपने पास में ही रखने के लिए कहती थीं।

बाबा ''सादा जीवन उच्च विचार'' में विश्वास रखने वाले एक उदाहरणमूर्त थे। बाबा को शान्ति की बहुत कद्र थी और वे प्राय: गहरी शान्ति में रहते थे। उन दिनों मुरली शुरू होने के पहले तीन मिनट का गीत बजता था। वह बाद में डेढ़ मिनट व बाद में एक मिनट कर दिया गया। इसके तुरन्त पश्चात् बाबा गहरी शान्ति में बैठ दृष्टि देते थे। बाबा जब भी अकेले होते थे तो शान्ति की गहन अनुभूति करते थे और हमें सिखाते थे कि इसी योगशक्ति से आत्मा शक्तिशाली बन सकती है। बाबा के प्रकम्पन बहुत ही शक्तिशाली व आकर्षक थे और उनके संग से आत्माएँ सहज ही अशरीरी अवस्था का अनुभव कर लेती थी। आज भी यदि आप बाबा की झोपड़ी या हिस्ट्री हॉल में शान्ति में बैठें तो बाबा की उपस्थिति के प्रकम्पन प्राप्त कर सकते हैं। शान्ति, सरलता, पवित्रता, सेवा व प्रेम आदि गुण बाबा के मूलभूत गुण थे। और सम्पूर्ण बनने के पहले बाबा ने ये सारे गुण सम्पूर्ण रूप से धारण कर लिए थे।

निर्भयता

बाबा ने हम सब में से एक-एक को चुना है। इस विश्व-रंगमंच में हम सभी आत्माओं की अपनी-अपनी भूमिका है। सभी की भूमिका विशेष है, साधारण नहीं। न तो आप किसी की भूमिका अदा कर सकते हैं और न कोई आपकी कर सकता है। इसका मतलब यह हुआ कि भविष्य पूर्व निश्चित है। हमें चाहिये कि हम अपने आपकी तुलना अन्य किसी से न करें। बायां-दायां देखना छोड़ अपने समय, शक्ति व खुशी की बचत करनी चाहिये। यदि हमें बाबा के करीब के संबंध का अनुभव है तो हमें और कुछ चाहिये नहीं।

बाबा ने हमें पक्का विश्वास दिलाया है कि हम सभी बाबा के नम्बर वन बच्चे हैं। केवल आठ ही रत्न होते हैं जो पास विद् ऑनर होते हैं। यह बात किसी को तकलीफदायक लग सकती है, इसलिए दिल की खुशी जिस बात से मिलती है उस पर ही ध्यान केन्द्रित कर लेना चाहिये। अगर अष्ट रत्नों की बात उन्नति में बाधा देती है तो इसको किनारे कर देना चाहिये। इससे हमें इस बात की मानसिक चिन्ता नहीं होगी कि हमारा नम्बर 8 या 108 या 16108 में, कहाँ आयेगा। यह जाने बिना भी उमंग, उत्साह व खुशी कायम रखी जा सकती है। इससे हम अपने आप के पुरुषार्थ को तीव्र करके शीघ्र ही उड़ती कला में आ सकते हैं । तब हम यह सोच सकते हैं कि हम

प्रथम 108 में आ जायेंगे। यह सहज है। हमें किस पद की प्राप्ति होगी, इस डर का अन्त अवश्य होना चाहिये। सबसे सुन्दर तरीका इसके लिये यह है कि बाबा के वरदान को याद रखें –''आप मेरे नम्बर वन बच्चे हो। सफलता तो आपका जन्मसिद्ध अधिकार है।''

इसके अलावा धर्मराज के डर की बात है। साकार बाबा कहते थे कि परमपिता परमात्मा अभी सर्व संबंधों का अनुभव करवाते हैं। धर्मराज का संबंध तो अन्तिम संबंध है और वो भी किनके लिए? जो कानून तोड़ते हैं। यदि मुझे बाबा के बताये नियम-मर्यादाओं से प्यार है; बाबा, ब्राह्मण जीवन, ज्ञान-योग एवं सतयुग से प्यार है तो धर्मराज से डरने का प्रश्न ही नहीं उठता। जो कानून को तोड़ते हैं वे ही पुलिस व कोर्ट से डरते हैं।

जब अव्यक्त बापदादा आते हैं तो आदरणीया दादीजी उनको भाकी (बाहों में लेना) भरती हैं और सहज बातचीत करती हैं तो कुछ भाई-बहनों को बड़ा आश्चर्य होता है कि बाबा कैसे मनुष्यों की तरह ही हैं; क्या ये वास्तव में परमात्मा हैं। उनके मन में तो परमात्मा के सर्वोच्च सत्ता होने का स्वरूप रहता है। वे यह भूल जाते हैं कि वह पिता व टीचर भी है और बाबा तो कहते हैं कि मुझसे प्यार होना चाहिये,डरने की कोई बात नहीं।

आरम्भ में जो भी बाबा से मिलन मनाते थे, सभी से बाबा भाकी भरकर मिलते थे। कहते भी हैं ना कि जहाँ प्यार है वहाँ कानून नहीं होता। कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि भाई-बहनें गाड़ी से दो-तीन दिन के सफर के बाद आबू पर्वत पहुँचते, सीधे ही बाबा से मिलने चले जाते और गले मिलते, बिना नहाये भी। अभी तो बाबा से सूक्ष्म में मिलन करते हैं। तरीका बदल गया है। बाबा सर्व संबंधों का अनुभव करवाके, हमसे बाप समान बनने का परुषार्थ करवाते हैं। बाबा जब इतना प्यार करते हैं तो डरने का तो प्रश्न ही नहीं।

बाबा कहते हैं कि सभी का सम्मान करना है क्योंकि इस ईश्वरीय कार्य में सभी विशेष हैं। अगर किसी में विशेषता नहीं दिखाई देती है तो भी एक बात तो सभी में है कि हम सभी बाबा के बच्चे हैं। जब हमारा दूसरों के प्रति सम्मान अथवा आदर है तो प्यार मिलना निश्चित है। इसमें डरने की कोई बात नहीं। चाहे वो किसी भी पद अथवा पोजीशन पर हो। बाबा हमें अनुभव की ऑथोरिटी बनाते हैं। जब हमें सर्वोच्च सत्ता बापदादा का डर नहीं है तो किसी अन्य से डरना क्या? मुझे याद है कि मैं कभी-कभी वी. आई. पी. (विशेष नामीग्रामी) लोगों से बिना समय लिये मिलने चला जाता था और उद्देश्य बाबा का संदेश देने का रहता था, तो कुछ मिनट का समय उनसे अवश्य मिल जाता था और मेरा काम

सहज ही हो जाता था।

ब्राह्मणों को इस बात का भी डर रहता है कि क्या सारा समय एक ही काम करते रहेंगे, परन्तु किसी भी वरिष्ठ भाई-बहन से पूछिए कि आप शुरूआत में क्या कार्य किया करते थे। आपको पता लगेगा कि छोटे-छोटे कार्य ही बड़े कार्यों के निमित्त बनाते हैं। आलराउन्डर दादी, जो कि दादी गुलजार की लौकिक माँ थी, सभी तरह के कार्य सहज कर लेती थी इसलिये उन्हें आलराउन्डर कहा जाता था।

जब बाबा के लिए ही कार्य करते हैं तो कभी-कभी आर्थिक चिंता भी हो सकती है। मुझे याद है कि एक बार जब बाबा को मैंने अपना अकाउन्ट दिखाया तो बाबा ने मुझे कुछ रुपये भविष्य के लिये अलग रखने की सलाह दी, परन्तु निश्चयबुद्धि होने की वजह से मैंने बाबा से कहा कि बाबा आप हमारे साथ हैं, इससे ज्यादा सुरक्षा हमें क्या चाहिये? मुझे असुरक्षा की भावना कभी छू तक नहीं पायी। बाबा की छत्रछाया तो बच्चों पर सर्वदा है ही है। यद्यपि हमें आत्मनिर्भर बनना चाहिये, परन्तु बाबा हमारी पूर्ण सुरक्षा की जवाबदारी लेते हैं। हमें तो बिना माँगे व बिना उम्मीद के मदद मिल जाती है। लौकिक परिवार वाले भी यही कहते हैं कि जो अलौकिक परिवार दे सकता है, वह लौकिक नहीं। यदि हमें दृढ़ विश्वास हो

कि हम बाबा की इस अलौकिक व्यवस्था में सम्पूर्ण सुरक्षित हैं तो सभी कार्य स्वत: ही हो जाते हैं। हमें अपने वरिष्ठ भाई-बहनों से राय मिलती है और बाबा की अदृश्य मदद तो है ही। हमें इस बात की चिन्ता नहीं करनी है कि दूसरों ने तो इतनी ज्यादा सेवा की है। सेवा का क्षेत्र बहुत बड़ा है।

मैं जल सेना में एक अधिकारी था और ज्ञान मिलने के तीन मास बाद ही जहाज से जाने वाला था एक ऐसे स्थान पर जहाँ कोई सेवाकेन्द्र नहीं था, मैं इस बात से चिन्तित भी था। मैंने बाबा को लिखा और बाबा के जवाब ने मुझे पूरी तरह से सुरक्षित बना दिया। उन्होंने मुझे कहा कि आपको केवल बाबा को याद करना है। जब अन्य अधिकारी शराब आदि के लिए जाते थे तो मैं 80 से भी ज्यादा लोगों की क्लास करवाया करता था। मुझे विश्वास हो गया था कि भले ही मैं सेवाकेन्द्र से दूर हूँ फिर भी मेरी स्थिति गिर नहीं सकती। तो केवल तीन मास में ही बाबा ने मुझे टीचर बना दिया। साधारणतया ऐसा करने में सालों लग जाते हैं। बाबा कहते भी हैं कि तुम सेवा से स्वत: अपनी पोजिशन बना सकते हो। ये सेवाकेन्द्र तो हर देश, हर गली में खुलने ही हैं, क्योंकि संदेश तो चारों तरफ फैलना है। डबल विदेशियों के लिए किसी भी जगह पर जाना सहज है।

यदि हमारे मन में भय है कि यह बहुत मुश्किल है तो हम सेवा कर नहीं सकते। यदि हम साहस व दृढ़ता के साथ करें तो सहज है। हमें यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि पूरा विश्व अभी गरीब है और हमें दाता बनना है। तथाकथित उन्नत देश आध्यात्मिक रूप से बहुत पिछड़े हुए हैं और आपको उन्हें सर्वश्रेष्ठ रूहानी समझ देनी है। बाबा के कार्य में निमित्त बनने का स्वमान होना चाहिए, इससे मन में असुरक्षा अथवा भय के संकल्प नहीं आयेंगे।

बाबा तो प्राय: कहते हैं- ''सच तो बिठो नच'' अर्थात् यदि आप दिल से सच्चे हैं तो स्वत: ही खुशी रहेगी। सत्यता का पालन करने में बड़ी हिम्मत की आवश्यकता है। आप यह तो जानते ही हैं कि एक झूठ को छिपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं। हम सभी सत्य बाप की संतान हैं। यदि हम सच्चे रहते हैं तो शक्तिस्वरूप व निडर रहते हैं। इसलिए अपने आप से अवश्य सच्चा रहना है। सत्य बोलते वक्त कटुता नहीं हो, बड़ी युक्ति व आदर से सत्य बात कहनी चाहिए, नहीं तो आप अन्य व्यक्ति को विचलित भी कर सकते हैं और आप जो कुछ कहते हैं वो ठुकराया भी जा सकता है। इसका मतलब यह भी नहीं कि मूल तथ्यों को आप कहें ही नहीं। सभी को सत्य से प्यार है। वे कहते हैं कि परमात्मा (शिव) ही सत्य है और हम परमात्मा के पास आते हैं इसलिए कि वो हमें सत्यता की जानकारी देते हैं। यदि हम अपने आचरण में

सत्यता का पालन कर सकें और स्वमान व सम्मान से एक-दूसरे से पारस्परिक संबंध रख सकें तो आश्चर्यजनक परिणाम सामने आ सकते हैं। बहुत बार ब्राह्मण सत्य बोलते वक्त घबराते हैं, परन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए। अभी हमारा परिवार बहुत बढ़ गया है और यदि कोई सत्य बोलता है तो उसकी आवाज चारों तरफ फैलती है। सत्य बोलने वाला कभी संतुलन खो नहीं सकता जबकि असत्य बोलने वाला प्राय: नाराजगी अथवा गुस्सा दिखाता है। हम सभी को बाबा का निडर बच्चा बनना है। सतयुग में तो हमें एक ऐसा राज्य प्राप्त होगा जिसमें कोई भी घुसपैठिया या विद्रोही नहीं होगा। बाबा से प्राप्त इस प्रालब्ध के अधिकार को कोई छीन नहीं सकता।

निश्चय की शक्ति

भक्ति-मार्ग में निश्चय की शक्ति पर बहुत-सी कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। इन सबमें यही दर्शाया गया है कि कैसे परमात्मा सभी आत्माओं व सारे विश्व को संरक्षण प्रदान करता है। अपने आप से हमें पूछना चाहिए कि ज्ञान मार्ग में आने के बाद मुझे अपने आत्मिक स्वरूप में, बाबा में, अलौकिक परिवार में व संगमयुग में कितना निश्चय है । शायद शुरू में बहुत प्रश्न हो सकते हैं। जब मैं पहली बार मधुबन आया तो बाबा ने मुझे अपने मित्रों सहित, जो भी प्रश्न हों उन्हें पूछने के लिए बुलाया। तब तक मुझे मुरली सुनते करीब छह मास हो चुके थे और मेरे मन में बहुत ज्यादा प्रश्न नहीं थे। सिर्फ पांच मिनट में सभी प्रश्न पूरे हो गए। उसके बाद बाबा ने पूछा कि और कोई प्रश्न है तो बोलो। मैंने कहा कि नहीं बाबा, और कुछ भी नहीं है। अब तो मैंने आपको सन्मुख पा लिया है। मुझे उस समय यह पक्का निश्चय हो चुका था कि मैं किसी साधारण इन्सान के सामने नहीं बैठा हूँ ,परन्तु ये तो सर्वोच्च सत्ता परमपिता परमात्मा जो समस्त आत्माओं के पिता हैं, वही हैं। जो भी वो पढ़ाते हैं वो सत्य है, केवल समझने के लिए प्रश्न पूछा जा सकता है। यह कोई निश्चय में कमी की बात नहीं है। हमारा निश्चय तभी होता है जब हम यह समझ जाते हैं कि हमें कौन पढ़ा रहा है और क्या पढ़ा रहा है और यही सर्वोच्च निर्देश अर्थात्

श्रीमत है। इससे हमें तीन चीजों में निश्चय होता है – स्वयं में, बाप में व ड्रामा में। उसके बाद अनुभवों के द्वारा हम निश्चय को और भी मजबूत बनाते जाते हैं।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जब सहज रूप से कोई ज्ञान मिल जाता है तो हम टीचर, टीचर की शिक्षा, समय (संगमयुग) व व्यवस्था (यज्ञ) का उतना सम्मान नहीं रखते। इससे हमारी उन्नति रुक जाती है। केवल निश्चय ही पर्याप्त नहीं है, हमें इन सबको दिल से रिगार्ड देना चाहिए। जितना दिल में प्यार व सम्मान होगा उतना हम निश्चयबुद्धि विजयन्ति बनते जायेंगे। जब निश्चय सतोप्रधान होगा तो हम स्वत: ही शक्ति स्वरूप बनते जायेंगे। जो भी आत्मायें दादियों के सम्पर्क में आती हैं, वे अनुभव करती हैं कि दादियों का कथन सहज स्वीकार्य हो जाता है। उसका कारण एक ही है कि उनका बाप में अटूट निश्चय है और वे अपने आप को निमित्त समझती हैं। दादियों के निश्चय में बहुत स्पष्टता दिखायी देती है, संदेह की कोई बात ही नहीं। इन आत्माओं ने साकार बाबा के अंग-संग रहकर बाबा की दिव्य-बुद्धि की सूक्ष्म अनुभूतियों से अपने आप को अनुभवीमूर्त बना लिया है। उनसे राय लेकर हम अपना बहुत-सा समय सहज रूप से बचा लेते हैं। अगर एक ही प्रश्न कई लोगों से पूछा जाए तो काफी वक्त लग जाएगा। दूसरी बात, यदि हम कमजोर होंगे तो हो सकता है कि सर्वश्रेष्ठ समाधान के बजाए

नीचे वाले को ही श्रेष्ठ मान बैठें और तब हमें दादियों के पास ही मदद के लिए जाना पड़े।

पहली अथॉरिटी तो है बाबा की मुरली। इसी का नाम श्रीमत है। श्रीमत वो सर्वोच्च निर्देश हैं जो हमें इस रूहानी मार्ग में श्रेष्ठ कर्म करने में मदद करते हैं, परन्तु कभी-कभी मन की पवित्रता व ज्ञान की गहराई के अभाव में मुरली को ठीक से समझ नहीं पाते। ऐसे वक्त में हमें निमित्त आत्मा की मदद लेनी चाहिए। गाँधीजी किसी भी समस्या का समाधान खोजने के लिए श्रीमद्भगवत गीता खोलते थे और जो भी पन्ना सामने आता था उसमें समाधान खोजने का परुषार्थ करते थे, परन्तु हम यदि रोज मुरली सुनते अथवा पढ़ते हैं तो अपनी समस्याओं का समाधान पाना सहज है। चाहे इसे निश्चय कहो या संयोग परन्तु वास्तविकता यह है कि मुरली में उत्तर मिल जाता है।

शुरू-शुरू में बाबा के पास जो भी बच्चे आए, वे भारत के विभिन्न प्रान्तों से और विभिन्न धर्मों से थे। उन्हें किसी भी वजह से परेशानी होती थी तो वे बाबा को लिखते थे। बाबा उन सबका उत्तर मुरली में दिया करते थे। मनुष्यों की समस्याएँ समस्त विश्व में एक जैसी ही हैं। यदि हमारा चिन्तन सकारात्मक है तो हर मार्ग सुगम है। नकारात्मक विचारों के मन में आने से निश्चय की कमी

हो सकती है और गलत परिणाम भी सामने आ सकते हैं। साधारणतया देखा गया है कि ब्राह्मण अन्य लोगों की तुलना में हल्के, खुशनुमा व हँसमुख होते हैं, परन्तु जब संदेह आता है तो खुशी गायब हो जाती है। वे अपने आप को दोषी समझ बैठते हैं और ज्ञान मार्ग को संशय से देखना शुरू कर देते हैं।

हम युद्ध के मैदान में खड़े हैं। ज्ञान मार्ग में हमारी सूक्ष्म शक्तियाँ और भी जागृत हो जाती हैं। माया ज्यादा से ज्यादा शक्तिशाली बनकर हमारे सामने आकर निश्चय को हिलाने की कोशिश करती है। शायद यही वजह है कि बहुत से ब्राह्मण यह पूछते रहते हैं कि विनाश होने में कितने वर्ष बाकी हैं। यदि हम यह याद रखें कि आत्मायें तो अविनाशी हैं और मृत्यु तो किसी भी क्षण हो सकती है तो हमें इस विश्व से वैराग्य रहेगा। यदि यह बात बुद्धि में रहे तो हमें लगेगा कि विनाश तो शुरू हो ही चुका है। विश्व के किसी भी कोने में देखिए, आप पाएंगे कि जीवन-मूल्यों का प्राय: उन्मूलन हो गया है। जीवन से प्यार नष्ट-सा हो गया है। केवल बाकी है तो इन शरीरों का अन्तिम संस्कार करना।

बाबा हमें बार-बार समझाते हैं कि यह पुरानी दुनिया तो खत्म हुई की हुई। हमें चाहिए कि हम कर्मातीत अवस्था को प्राप्त कर फरिश्ता बन स्वर्णिम दुनिया में प्रवेश करें। हमारी रुचि इस विश्व

की सेवा कर, इसे परिवर्तित करने में इसलिए है कि दैवी स्वरूप में हमारे यहाँ उपस्थित होने से पहले यह संसार इस योग्य बन जाए।

बाबा कहते हैं कि शक्तिशाली बनने के लिए अपना मुँह अब बाप की तरफ कर लो। बाबा का स्वरूप जब हममें समाया हुआ होगा तो हम समस्त विश्व में लाइट व माइट (प्रकाश व शक्ति) की किरणें फैला सकेंगे और इसी सामूहिक चेतना के द्वारा विश्व के प्रकम्पनों को बदल सकेंगे। इसके लिए हमें निश्चयबुद्धि होना ही चाहिए। न कोई अन्दर की कमजोरी होनी चाहिए और न ही कोई बाहरी दबाव। हमें उदाहरणमूर्त बन आत्माओं को प्रेरित करना है जिससे वे परिवर्तन का साहस कर सकें।

बाबा कहते हैं कि बच्चे, आपका हर सेकेण्ड बहुत कीमती है क्योंकि आप वी.वी.आई.पी. हो। हमें पूरे विश्व को सही दिशा देनी है। बाबा के बच्चे होने के नाते जिस कार्य के लिए बाबा निमित्त है, हम भी उस कार्य में निमित्त हैं। सतयुगी सपने देखने में ब्राह्मणों का बहुत बड़ा उद्देश्य समाया हुआ है। हमारी भूमिका केवल अपने आपको परिवर्तित करने तक अथवा यह अनुभव करने तक ही सीमित नहीं है कि जब मेरी तबियत ठीक नहीं थी तो बाबा ने मेरी बहुत मदद की। ऐसी कहानियाँ तो, ऊपरी तौर पर ज्ञान उठाने वालों के मुख से भी सुनने को मिल सकती हैं।

बाबा का हमारे में निश्चय है कि हमें ही परिवर्तन के निमित्त बनना है। जब हम बाबा से योग लगाते हैं तो हमारी शक्तियाँ लाखों गुणा बढ़ जाती हैं। हमें सतयुगी संसार बनाना है तो योग में बैठकर अपनी शक्तिशाली किरणें अथवा प्रकम्पन समस्त विश्व रूपी गोले को, सभी आत्माओं को, प्रकृति को व समस्त विश्व के प्राणी मात्र को देने का प्रयोग करना चाहिए।

चूंकि हमें सर्वोत्तम मात-पिता मिले हैं, हमें इस छोटे से संगमयुग का व अपने श्रेष्ठ भाग्य का स्वमान होना चाहिए। ऐसे स्वमान से हमें वर्तमान शक्तिशाली व्यक्तित्व का व भविष्य सतयुगी स्वरूप का अहसास हो सकता है। बाबा कहते हैं कि जैसे-जैसे हम सतयुग के नजदीक जाते जायेंगे तो हम अपने सपनों में ऐसे दृश्य देखेंगे जैसे कोई जहाज किनारे पहुँचने वाला हो। जैसे-जैसे हम सम्पूर्णता की तरफ अग्रसर होंगे, वैसे-वैसे हमें आन्तरिक संतुष्टता, बाबा व समस्त विश्व से शुद्ध प्यार का गहरा अनुभव होता जाएगा और यह स्पष्ट हो जाएगा कि हम लक्ष्य के करीब हैं।

इस बात का सदा नशा रहे कि आपको आत्मा व परमात्मा का ज्ञान है और परमपिता परमात्मा से आपके व्यक्तिगत संबंध हैं। कहते भी हैं कि जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आँधी और तूफान। यह निश्चय ब्राह्मण जीवन की बहुत मजबूत

नींव साबित हो सकता है। दूसरा यह कि ड्रामा में सही तरीके से निश्चय हो। बाबा कहते हैं कि आप ही बच्चे कल्प-कल्प वर्सा लेते आये हैं, इसमें कोई नयी बात नहीं। मैंने हर कल्प वर्सा लिया है, यह निश्चय मन को शीतलता प्रदान करता है। तीसरी बात बाबा कहते हैं कि सफलता ब्राह्मण बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। हम जो भी कार्य करते हैं वो सही ज्ञान, उचित मार्गदर्शन व समझ के आधार पर करते हैं। इसलिए ये एकदम सही है और सफलता भी निश्चित है। ये बातें ब्राह्मण जीवन में आश्चर्यजनक परिणाम दिखाती हैं इसलिए जब भी सेवा में जाओ तो इनको साथ रखो। ब्राह्मण जीवन का ज्यों-ज्यों अनुभव बढ़ता जाएगा तो निश्चय में वृद्धि भी निश्चित है।

समस्त विश्व में कितनी निराशा का वातावरण है, हम बाबा के बच्चे कितने आशावादी व भरोसेमंद हैं। जरूरत से ज्यादा भरोसेमन्द होना भी कभी-कभी नुकसानदायक हो सकता है। बापदादा सर्वोच्च सत्ता होने के बावजूद भी कितने नम्रचित हैं। हमें अपने आपको विश्व का सेवाधारी समझना चाहिए। सेवाधारी समझेंगे तो अभिमान व अहंकार की गंध नहीं रहेगी। बहुत ऊँची सफलता व प्राप्ति के बावजूद भी विश्व-सेवाधारी समझने वाले बच्चे सारी महिमा बाबा को देते हैं, स्वयं ग्रहण नहीं करते। हमें समझना चाहिए

कि हम तो निमित्त हैं, वो हमारे द्वारा करवा रहा है। नम्रता एवं निमित्त भाव ब्राह्मण जीवन के मूल सिद्धान्तों में से हैं जो सफलता के लिए परमावश्यक हैं।

स्वमान व निर्मानता का संतुलन

यह एक सहज विषय है, कोई कठिन नहीं, बाबा से तो यह हम रोज ही अनुभव करते हैं। बाबा रोज मुरली पूरी ऑथोरिटी से व सम्पूर्ण स्वमान में स्थित होकर हमें सुनाते हैं और हम बच्चों के स्वमान को भी जागृत करते हैं। बाबा रोज मुरली के अन्त में ''रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते'' कहते हैं; साथ ही साथ हम बच्चे भी ''रूहानी बच्चों की रूहानी बाप को नमस्ते'' कहते हैं। बाबा का बच्चों के सामने रोज नमस्कार करना, सर्वोच्च सत्ता होने के साथ निरंहकारिता का बैलेन्स दिखाता है।

रूहानी ज्ञान की सर्वोच्च सत्ता के रूप में, प्रत्येक मुरली में बाबा बहुत से बिन्दुओं पर बोलते हैं। उनके बराबर और कोई सत्ता नहीं तथा किसी को भी 'ज्ञान, पवित्रता, प्यार, शान्ति व आनन्द का सागर' जैसी उपाधियाँ दी नहीं जा सकती। बाबा कहते हैं कि मैं आता ही हूँ हम सभी को परिवर्तन करने के लिए। बाबा द्वारा इस परिवर्तन की प्रक्रिया की यद्यपि सभी को दरकार है, परन्तु कोटों में कोई ही महसूस कर भाग्य ले पाता है। यह बात भी हम आत्माओं को अपना श्रेष्ठ स्वमान याद दिलवाती है।

सभी धर्म परमात्मा से यही आराधना करते हैं कि वे उन्हें पावन बनाएं और उन्हें सत्यबुद्धि व ज्ञान दें, परन्तु हम बच्चे तो

जिस घड़ी यह समझ जाते हैं कि हम बाबा के बच्चे हैं, हमारा परिवर्तन शुरू हो जाता है। यह नयी समझ हमारी चेतना, नजरिया, बात, व्यवहार सभी बदल देती है। जितनी-जितनी यह समझ बढ़ती जाती है, उतनी-उतनी ईश्वरीय पढ़ाई के प्रति हमारी रुचि भी बढ़ती जाती है। हमें इस बात की समझ आ जाती है कि हम सब का मुख्य उद्देश्य अब सतयुग में श्रेष्ठ पद प्राप्त करना है और हर ब्रह्माकुमार-कुमारी को भगवान के डायरेक्ट बच्चे होने की खुमारी रहती है। जितना-जितना हम इस चेतना अथवा समझ में रहते हैं, उतना-उतना स्वमान स्वत: ही जागृत होता जाता है।

ईश्वरीय संतान कहलाने का अधिकार केवल हम बच्चों को प्राप्त है। स्वदर्शन चक्रधारी टाइटल जो श्री कृष्ण के लिए गायन है, बाबा ने आकर हम बच्चों को दिया। बाबा कहते हैं कि बच्चे, चक्र को घुमाकर याद करो कि आप बच्चे कौन? वास्तव में ऐसे टाइटल तो विश्व-राज्याधिकारी को ही दिये जाते हैं, जो समस्त विश्व पर राज्य करते हैं। बाबा इतना ऊँचा स्वमान जगाकर हम बच्चों का जीवन खुशियों से भरते रहते हैं।

बाबा कहते हैं कि एक जन्म में प्राप्त थोड़े-बहुत ज्ञान से मनुष्य किताब आदि लिखते हैं और वे विज्ञान, इतिहास अथवा साहित्य आदि विषयों की ऑथोरिटी कहलाने लगते हैं। परन्तु आपकी

ऑथोरिटी क्या है ? हम तो ईश्वरीय ज्ञान के विद्यार्थी हैं। हम राजयोग से केवल किताबी ज्ञान अथवा सैद्धान्तिक ज्ञान ही नहीं प्राप्त करते, परन्तु अनुभव की ऑथोरिटी बनकर बोलते हैं।

अन्य लोग ईश्वर को ढूंढ़ रहे हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं और आप उनको जानते हो, आपका उनके साथ संबंध है और सीधा सम्पर्क है। केवल यही एक समय है जब बाबा से हमें सर्व प्राप्तियों का अनुभव होता है। बाबा के पास जो कुछ भी है हमें वर्से के रूप में प्राप्त होता है और जैसे-जैसे हम गुण रूपी इस वर्से को लेते जाते हैं, वैसे-वैसे बाप समान बनते जाते हैं। हालांकि बाप के पूरा-पूरा समान कभी नहीं बन सकते , परन्तु हाँ नजदीक काफी हद तक पहुँच सकते हैं। जिस घड़ी बच्चा पैदा होता है वह पिता की सम्पत्ति का अधिकारी बन जाता है। तो बाबा को 'नमस्ते' कहना भी, वास्तव में, स्वमान का एक बिन्दु है।

बाबा हमें डबल ताजधारी बनाते हैं। अभी पवित्रता का ताज व सतयुग में सर्वोच्च राज्य का ताज। बाबा तो सतयुग के राज्याधिकारी बनने का ताज लेते नहीं। बाबा हमारा स्वमान जगाते हैं कि आप आत्मायें ही इस चक्र में विशेष आत्मायें हो। यह एक महावाक्य है परन्तु इसमें बेहद ज्ञान की गुह्यता समायी है।

ब्रह्मा बाबा के मन में यह स्पष्ट था कि मैं बच्चों के सामने

उदाहरणमूर्त हूँ इसलिए जैसे कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और करेंगे। ब्रह्मा बाबा ही शिव बाबा के चरित्र को धारण करके व्यवहार में हम बच्चों को शिक्षा देने के निमित्त बने। बाबा का जीवन एक खुली किताब की तरह से था। बाबा ने हमें उदाहरणमूर्त बन समय व परिस्थितियों के साथ कुशलतापूर्वक चलना सिखाया। मुरली बोलते वक्त ब्रह्मा बाबा शिवबाबा के महावाक्य एक विद्यार्थी की तरह सुनते थे और बाद में उन पर मनन-चिन्तन करके बच्चों के साथ अपने अनुभवों को बाँटते थे। बाबा एक टीचर की हैसियत से सम्पूर्ण विश्वास के साथ बोलते थे। बिल्कुल नया ज्ञान होने के बावजूद निडर रहते थे। साकार मुरलियों से बाबा का यह विश्वास स्पष्ट झलकता है। साथ ही उन्हें इस ज्ञान का कोई अभिमान भी नहीं था। बाबा जब भी बोलते थे तो जानते थे कि वे बच्चों को ज्ञान का इंजेक्शन लगा रहे हैं अथवा बच्चों में स्वमान भर रहे हैं ताकि सभी बच्चों को यह नशा रहे कि किसके सन्मुख बैठे हैं और कौन बोल रहा है।

बाबा ने हमें यह अनुभव करवाया कि वे केवल अपने बच्चों (ब्रह्मावत्सों) से ही बात करते हैं, समस्त विश्व से नहीं। बाबा जब अपने बच्चों से बात करते थे तो ऐसा लगता था जैसेकि कोई जनरल सैनिकों में शक्ति भर रहा हो, परन्तु लड़ने की शक्ति नहीं, सेवा करने की शक्ति। वे कहते थे कि यदि आपके पास रूहानी

ज्ञान व दिव्य बुद्धि का खज़ाना है तो आपको बिना किसी जाति, रंग, राष्ट्र और धर्म के भेदभाव के समस्त विश्व के साथ इसे बाँटना है।

बाबा कहते थे कि विश्व को इस ज्ञान की बड़ी आवश्यकता है। इस ज्ञान के बिना स्वमान जग नहीं सकता। अभी तो सभी विकार–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार उन पर अत्याचार कर रहे हैं। सभी को इस संकट से आप बच्चों को ही मुक्त करना है। जब तक आपमें पूरा स्वमान व विश्वास नहीं होगा तब तक आपमें सेवा करने का साहस हो नहीं सकता। इसमें आपको फालोफादर करना है। जैसे बाबा अपने को मोस्ट ओबिडियन्ट सर्वेन्ट, फादर व टीचर समझते हैं वैसे ही आप बच्चों को भी अपने को विश्व-सेवाधारी समझना है क्योंकि इस रूहानी ज्ञान के सभी गुण रूपी रत्न आप बच्चों के पास भी हैं। साथ ही साथ बाबा ने हमें सावधानी भी दी कि मास्टर ओशन अर्थात् मास्टर सागर बनने का झूठा अभिमान भी आपको नहीं होना चाहिए। ये गुण तो आपको स्वयं को व समस्त विश्व को शांत व सुखी बनाने के लिए शिवबाबा से ही मिलते हैं। जब तक आपमें विश्व-सेवाधारी का भाव नहीं है, तब तक ये ज्ञान आप अन्य लोगों को सुना नहीं सकते।

बाबा कहते थे कि तुमको तर्क-वितर्क नहीं करना है, इससे

कोई फायदा नहीं है। जब आप इस ज्ञान को जीवन में धारण करोगे तो यह आपकी सच्ची सम्पत्ति बन जाएगी व जब एक-दो को सुनायेंगे तो कई गुणा हो जायेगी। ज्ञान-योग के बिन्दुओं को एक-दो को सुनाने से खुशी क्यों मिलती है? क्योंकि आपकी कमाई कई गुणा हो जाती है। यही तो इस रूहानी ज्ञान व पौराणिक ज्ञान में मुख्य फर्क है। यद्यपि किताबें कीमती हैं परन्तु जब ईश्वरीय ज्ञान को सुनते सुनाते हैं तो यह बढ़ता जाता है। इस ज्ञान को सुनाने से पहले अनुभव करना अति आवश्यक है। जब इस ज्ञान को निर्मान होकर सुनाया जाता है तो आत्मायें इसे सहज रूप से स्वीकार कर लेती हैं।

बाबा निर्मानता के कई उदाहरण देते थे। मान लीजिये, आप सेन्टर या मधुबन में एप्रन लगाकर किचन में सेवा कर रहे हैं और कोई ज्ञान सुनने आ गया तो बाबा कहते थे कि आपको उनसे मिलने जाना हो तो ड्रेस बदलने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप एप्रन पहनकर जायेंगे तो वे यही सोचेंगे कि इनका कुक इतना होशियार है तो टीचर कितना होगा! बाबा ने प्राय: सभी प्रकार की सेवा करके दिखाई। बाबा कहते थे कि इस ईश्वरीय सेवा का कोई भी कार्य छोटा नहीं है। मैं बाबा को लिखा करता था कि बाबा मैंने इतनी आत्माओं को कोर्स करवाया है। बाबा जवाब में लिखते थे कि वो तो ठीक है परन्तु इसके अलावा तुम क्या करते हो? तुमको

तो आलराउन्डर बनना है।

इस ईश्वरीय ज्ञान में हम अपनी विशेषताओं को तो उजागर करते ही हैं साथ ही साथ अन्यों की विशेषताओं को भी मानते हैं। होशियार व गुणवानों को अधिक उन्नति करने का अवसर मिलता है जिससे बाबा की सेवा बढ़ सके। इस प्रक्रिया में हम अपना भाग्य बनाते हैं। बाबा बहुत नम्रचित्त थे, हम उनकी बात कभी-कभी ठीक से समझ नहीं पाते थे। बाबा कभी-कभी कुछ लिखत लिखकर या चित्र बनाकर कहते थे कि देखो, यह ठीक बना है ना! निमित्त वरिष्ठ भाई-बहनें भी ऐसा करते थे परन्तु मुझे ये बातें ठीक समझ में नहीं आती थीं। मुझे याद है कि कुछ बातों के पूछे जाने पर मैं बाबा व विश्व किशोर दादा को यह कह देता था कि मैं इन सब बातों को नहीं जानता, इनके लिए मैं बहुत छोटा हूँ परन्तु वे मुझे फिर भी देखने व समझने के लिये प्रोत्साहित करते रहते थे। यह वास्तव में मेरे लिए एक प्रशिक्षण था और छिपे हुए मेरे व्यक्तित्व को सुंदर स्वरूप देने के निमित्त था ताकि भविष्य में उसे सेवा में लगाया जा सके।

बाबा कहते हैं कि लोगों की विशेषताओं को जानकर, प्रयोग में लाने का अवसर उन्हें प्रदान करो। बाबा हम बच्चों को कार्य कैसे करवाया जाए, इसके भी सूक्ष्म संकेत देते हैं। हमें अपने द्वारा

की गई सेवाओं का झूठा अभिमान नहीं होना चाहिए। एक बार की बात है कि बाबा ने मुरली में कहा कि आप बच्चे पूजनीय हैं और बाबा आपको फिर से वैसी सर्वोच्च स्थिति में ले जाने के लिए आए हैं, ऐसा एक चित्र बनाया जाए। फिर सीढ़ी का चित्र बनाया गया और बाबा ने बहुत प्रशंसा की तो मुझे बेहद खुशी मिली। परन्तु अगले दिन बाबा ने चैकिंग करके 8 नये प्वांइट उस चित्र में और सम्मिलित करने के लिए कहा। बाबा ने यह भी कहा कि बच्चों को थोड़ी-सी सेवा करके यह नहीं समझ लेना चाहिए कि सब कुछ पा लिया है, इसका कोई झूठा अभिमान अथवा अहंकार नहीं रखना है। इससे स्पष्ट है कि बाबा यही चाहते हैं कि हम बच्चे हर कार्य में सम्पूर्ण रूप से प्रवीण बनें। जो कुछ भी हुआ है, यह अन्त नहीं है। हमें चाहिए कि हर कार्य में नवीनता लाकर और आगे बढ़ायें। शायद इसलिए बाबा हमें रोज कुछ ना कुछ नया काम देते रहते हैं। तपस्या वर्ष के बाद मुझे ऐसा लगा कि अब अन्तिम घड़ियाँ आयीं और हमें कर्मातीत बन जाना चाहिए, परन्तु बाबा ने कहा कि आप बच्चों में तपस्या व सेवा का बैलेन्स होना चाहिए।

ऐसा नहीं है कि यज्ञ में शुरू की 15-20 वर्षों की अवधि में आने वाले ही डबल ताजधारी देवी-देवता बनेंगे, परन्तु जो आज भी आए हैं, वो बाबा से वर्सा प्राप्त कर सकते हैं। बाबा उन बच्चों को भी उनके समय, शक्ति, संकल्प व अनुभव सेवा में लगाकर

सतयुगी राज्य-भाग्य लेने का अवसर देते हैं। अभी हमारी भूमिका क्या है? हम अक्सर सुनते हैं कि फालो फादर करो। कौन से फादर को फालो करें– क्या शिवबाबा को जिनके पास वापस परमधाम जाना है या ब्रह्मा बाबा को अथवा वरिष्ठ भाई-बहनों को! मैं समझता हूँ कि हमारी दादियाँ विश्व में सबसे व्यस्त हैं। वो तपस्या के बारे में इतनी बातें करती हैं, आखिर वो तपस्या कब करती हैं? जब भी वो बोलती हैं, तो पहले योगयुक्त होती हैं और जो कुछ बोलती हैं, वो बाबा द्वारा दिया गया ज्ञान ही बोलती हैं। इतने लम्बे समय की पवित्र धारणायें ही आज उनके इतना शक्तिशाली होने की वजह हैं। यदि वो किसी को दो शब्द बोलती हैं या दृष्टि देती हैं तो यह एक शक्तिशाली इंजेक्शन की तरह लगता है। परिणाम तुरंत दिखायी देते हैं। केवल उनका उपस्थित होना ही सबको सुखदायी मालूम होता है, यही वजह है कि वे सर्वप्रिय हैं।

हमें पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना है क्योंकि पढ़ाई से ही महानता व राजाई के संस्कार आयेंगे। हम विश्व-सेवाधारियों को 24 घण्टे ही स्वयं को ड्यूटी पर समझना चाहिए, जैसे कोई सैनिक सेना में भरती होने पर समझता है।

कुछ लोग कहते हैं कि ज्ञान की लेन-देन में रमणीकता होनी चाहिए। बाबा द्वारा दिये ज्ञान में भी बहुत रमणीकता है, परन्तु इस

बात का ध्यान रहे कि कभी ज्ञान की गहराई से दूर ना जाएँ। ज्ञान की ऑथोरिटी व महानता को कभी भी कम नहीं होने देना चाहिए। सर्वोच्च सत्ता आपको पढ़ाने आयी है! ब्रह्मा बाबा जो मानवता के ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर (पूर्वज) हैं तो उनके बच्चे कौन और कैसे हैं? आप बच्चे ब्रह्मा व मम्मा के साथ कल्प-वृक्ष के चित्र की जड़ों में बैठते हैं। आप सभी रचयिता व सेवाधारी दोनों हो। जिस भी ब्राह्मण में विश्व-कल्याण की भावना होगी , वो सेवा के मौकों को खोजता रहेगा। उसके चेहरे पर आपको सर्वदा खुशी की झलक दिखाई देगी, क्योंकि सेवा का प्रथम फल खुशी ही है। नये लोगों को यह खुशी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

ब्रह्मा बाबा को यह निश्चय था कि जैसे-जैसे लोग उनके नजदीक आते जायेंगे, वैसे-वैसे उन्हें उनकी स्थिति, वृत्ति व प्रकम्पन से शिक्षा मिलती जाएगी। उन्हें इस बात का भी एहसास था कि वो साधारण नहीं हैं, फिर भी वो एकदम साधारण इन्सान की तरह ही रहते थे। उन्होंने अपने आपको बड़ा दर्शाने की कोशिश कभी भी नहीं की। बाबा कहा करते थे कि अपने आपको यह समझो कि आप छह मास से ज्ञान में हो और आपको सामने बैठकर अपना अनुभव सुनाना है। कोई भी गुरु अपनी सीट पर ऐसे बैठाता नहीं है। ऑथोरिटी होने के बावजूद भी बाबा का मुख्य उद्देश्य हमेशा दूसरों की स्थिति को ऊपर उठाना ही रहता था।

बाबा की निर्माणता का दूसरा उदाहरण यह है कि बाबा कहते थे कि मैं भी आपकी तरह स्टुडेण्ट ही हूँ। जब शिवबाबा बोलते हैं तो जैसे आप, वैसे ही मैं भी सुनता हूँ। साथ ही साथ वो यह भी कहते थे कि आप तो उनके माध्यम से शिवबाबा से बातचीत कर सकते हो, वो तो नहीं कर सकते।

बाबा ने औपचारिकता अथवा ढोंग को अपने पास फटकने तक नहीं दिया। यदि कोई उनके पैर छूता तो बाबा पैर हटा लेते थे और कहते थे कि बाबा ऐसी कोई चीज किसी से स्वीकार नहीं करते। बाबा चाहते थे कि जो कुछ भी वो करें, बच्चों को सिखाने के निमित्त हो। यहाँ तक कि जब बैडमिन्टन भी खेलते थे तो बाबा हमें सिखाते थे कि कैसे ईश्वरीय याद में खेल सकते हैं। बाबा की सेवाधारियों के प्रति विशेष स्नेह भरी नजर रहती थी और वे कहते थे कि सेवाधारी बच्चे बाबा से बिना तय किये, किसी भी वक्त, दिन हो अथवा रात हो, आकर मिल सकते हैं।

हमें उदाहरणमूर्त ब्रह्मा बाबा व दादियों को सामने रख स्वमान व निर्माणता के संतुलन को सीखना चाहिए। इस ब्राह्मण जीवन में संतुलन बनाये रखने के लिए हमें चाहिए कि हमारा लव (प्यार) एवं लॉ (कानून) का तथा नवीनता व खुशी का संतुलन हो। यदि आप हर समय नये विचार खोजते रहेंगे तो हो सकता है कि कुछ

समय बाद नये विचार आना बन्द हो जायें। यही नहीं योग के लिए भी बाबा कहते हैं कि स्नेह व शक्ति का, शान्ति व चिन्तन का संतुलन होना चाहिए। एक श्रेष्ठ संतुलन तभी रखा जा सकता है जब ये सब उचित स्तर में हों, न कोई ज्यादा और न कोई कम।

संतुलन सीखने के लिए मधुबन एक बहुत ही उचित स्थान है, यहाँ आप अनुभव करके सीख सकते हैं।

बापदादा के समीप कैसे आएँ

हम सभी बापदादा की समीपता का अनुभव क्यों करना चाहते हैं क्योंकि हर आत्मा की आन्तरिक अभिलाषा होती है कि वो परफेक्ट बने। विशेष तौर से ब्राह्मण आत्माएँ, जो ईश्वर को पहचान चुकी हैं, वो तो सबसे ज्यादा चाहती हैं। उनको अच्छी तरह से पता रहता है कि और कोई उनकी इस इच्छा-पूर्ति में मददगार नहीं बन सकते।

हमें यह स्पष्ट है कि अभी ऐसा वक्त है जब वो स्वयं आकर गाइड करते हैं, अपना साथ देते हैं व हमारी संभाल करके हमें सुरक्षा प्रदान करते हैं। बाबा ही इतने शक्तिशाली हैं जो हमारे मार्ग की सब रुकावटें दूर कर सकते हैं। जब ये बात हमारे मन में स्पष्ट हो जाती है तो उनके बोल सुनने का दिल करता है व उनसे गाइडेन्स लेना अच्छा लगता है। यद्यपि हम ब्राह्मणों के पास मुरलियों का बहुत अच्छा संग्रह है, फिर भी हर नई मुरली का बेसब्री से इंतजार रहता है, यह सोचकर कि बाबा इस वक्त पता नहीं क्या नया बोल दें। हम हर वक्त सहज व सुगम तरीकों को सुनने की इच्छा रखते हैं जिससे अपने लक्ष्य को यथाशीघ्र प्राप्त कर सकें। बाबा सुप्रीम गाइड व सतगरु हैं, वही हमें इन तरीकों को सहज करके बताते हैं, वो इनको कठिन नहीं बनाते। यदि आप मेरे पास राय लेने के लिए आएंगे कि उन्नति कैसे हो तो मैं कहूँगा कि चार्ट रखो, उसमें कुछ

प्वाइंट लिखो और चैक करो कि कितने बजे उठे आदि-आदि। परन्तु बाबा एक बात ही कहेंगे कि मीठे बच्चे, केवल दिल से कहो 'बाबा' और आप मेरे साथ का अनुभव कर सकते हैं। हमें यह नहीं मानना चाहिए कि बाबा जब आते हैं और मुरली सुनाते हैं तभी हम बाबा के करीब होते हैं। वास्तव में यह तो वह वक्त है जब बाबा 4933 वर्ष तटस्थ रहने के पश्चात् सक्रिय होते हैं। बाबा आते ही हैं हमें सम्पूर्ण बनाने की प्रेरणा देने व जागृत करने।

बाबा रोज समस्त विश्व का भ्रमण क्यों करते हैं? क्योंकि बाबा जानते हैं कि बच्चों की अब सम्पूर्णता की इच्छा जगी है। बाबा कहते हैं कि जैसे ही हम उन्हें याद करते हैं, बाबा हाजिर रहते हैं। कभी-कभी जब हम बीमार रहते हैं या किसी मानसिक कष्ट से ग्रसित होते हैं तो बाबा से मदद माँगते हैं और बाबा हमें राहत दिलाते हैं। और सब चीजों को भूलने व बाबा को याद करने से जीवन की रुकावटें सहज ही दूर हो जाती हैं। यदि हम और चीजों को याद करते हैं तो शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों से रुकावट महसूस करते हैं। तब अन्तिम उपाय के रूप में हमें बाबा की ही याद आती है।

हम चाहे कितने ही समय से ज्ञान में हों, सूक्ष्म पालना के अनुभव होते ही रहते हैं। ये हम सब बच्चों के लिए स्वाभाविक हैं।

इस ज्ञान-मार्ग में कभी-कभी पुरुषार्थ को छोड़ आत्माएँ भटक भी जाती हैं, उस समय बाबा ऐसी परिस्थितियाँ बना देते हैं कि हम भटकने से बच जाते हैं। जब-जब हम ज्ञान से विकसित होते हैं, तब-तब बाबा की इस अदृश्य मदद का अनुभव करते हैं। यह अपनी खुद की ही कमजोरियाँ हैं जिन्हें हम माया कहते हैं। ये कोई बाहर से तो आती नहीं हैं, परन्तु आन्तरिक स्थिति का ही प्रतिबिम्ब हैं। ज्योंहि कमजोरियों को पहचान हम अपना मुँह बाबा की तरफ घुमा लेते हैं तो हमें फिर से स्पष्ट, स्वच्छ, व शक्तिशाली बनने का अनुभव होता है। हमें यह पता लग जाता है कि यह हमारे ही मानसिक संकल्पों का तूफान था और हम अपनी स्वस्थिति में फिर से टिक जाते हैं।

बाबा से समीपता की अवस्था विभिन्न प्रकार की अर्थात् अलग-अलग स्तर की हो सकती है, क्योंकि हम बच्चों की अवस्था का स्तर अर्थात् स्थिति हर समय एक समान नहीं रह सकती। केवल शिवबाबा ही सम्पूर्ण एकरस अवस्था में हर समय रह सकते हैं क्योंकि उनका शरीर नहीं है। जब साकार बाबा में शिवबाबा आए हुए होते थे और साकार बाबा को खाँसी आती तो शिवबाबा कहते थे कि यह उसके कर्मों का बंधन है, मेरा नही।

हमारी अवस्था ऊपर-नीचे होना स्वाभाविक है, इसे हमें स्वीकार

कर पुरुषार्थ करना चाहिए। हम यह देखते हैं कि जितने मन के बन्धन कटते जायेंगे, बाबा से उतना ही अधिक समीपता का अनुभव हम करते जायेंगे। जब हमारे मन में कमजोर संकल्प चलते हैं तो हमें यह अनुभव होता है कि यह मेरा सच्चा अथवा आदि स्वभाव नहीं है और यह श्रीमत के विपरीत है। ऐसे वक्त हमें पता रहता है कि हम वक्त गँवा रहे हैं, हमारी खुशी कम हो जाती है और आनन्द की अनुभूति हो नहीं सकती। यदि साक्षी होकर देखें तो हमें स्पष्ट हो जाएगा कि हमारी बाबा से दूरी बढ़ गई है। हम अपनी अवस्था का पोतामेल अपने ही मन रूपी दर्पण में देख सकते हैं। बाबा तो कभी ऐसा कहते नहीं कि मेरे पास मत आओ। बाबा तो कहते हैं कि आप कैसे भी हो, मेरे बच्चे हो। हम स्वयं को लायक समझने की वजह से बाबा से किनारा कर लेते हैं। साथ ही साथ हम यह भी महसूस करते हैं कि हमें और ज्यादा पुरुषार्थ की आवश्यकता है। बाबा तो कहते हैं कि अपने आपको, जैसे भी हो स्वीकार करके पुरुषार्थ करो तो आप उड़ सकेंगे, नहीं तो अन्दर-अन्दर मन खायेगा। हमारे अन्त:करण की शान्ति अर्थात् निर्संकल्प अवस्था हमें बाबा के समीप ले जाने में मदद करती है। यह बाबा की समीपता के अनुभव का पहला सोपान है।

अठारह जनवरी, 1969 की अन्तिम साकार मुरली में बाबा ने कहा कि जो बच्चे ईमानदार, वफादार व फरमारबरदार हैं वो

बाबा को बहुत प्रिय हैं, वो बाबा के दिल के पास हैं। ऐसा होना कोई बहुत मुश्किल नहीं है। हम यहाँ पर आये ही हैं किसी बड़ी वजह से, किसी विशेष उद्देश्य से। हमें अपनी कमजोरियों को ईमानदारी से स्वीकार करना चाहिए। हमें ऐसा करके निरुत्साहित होने की आवश्यकता भी नहीं है। आपको सतयुग के प्रिंस व प्रिंसेस बनने की शिक्षा दी जा रही है और आप हैं कलियुग के अन्तिम छोर पर, जहाँ आत्माओं की सबसे ज्यादा खराब अवस्था रहती है। अब आपको यह महान परिवर्तन करना है इसलिए आपको चाहिए कि आप जो भी हैं, जैसे भी हैं, स्वयं को स्वीकार करें और इस परिवर्तन की प्रक्रिया में ईमानदारी व खुशी से आगे बढ़ें।

योग की विभिन्न अवस्थाओं के द्वारा हम अपने आपको सुधारते हैं। बाबा योग में सकाश लेने के लिए अक्सर कहते हैं जिसका अर्थ है शक्तिशाली किरणें लेना। इन योग की किरणों से ही योग-अग्नि प्रज्वलित होती है और इसी अग्नि से नकारात्मक विचार व विकर्मों का बोझ खत्म होता है। अच्छाई अथवा बुराई दोनों की जड़ संकल्प हैं। जैसे हमारे संकल्प होंगे, वैसे ही बोल एवं कर्म होंगे और उसी अनुसार फल की प्राप्ति होगी। जैसे-जैसे हम बाबा से सकाश लेते हैं, वैसे-वैसे हम हल्के होते जायेंगे और विकर्मों का बोझ दूर होने से खुशी बढ़ती जाएगी।

जब तक नेगेटिविटी समाप्त नहीं होगी, हमारे में पोजीटिविटी आ नहीं सकती। कभी-कभी हम सोचते हैं कि हम पोजीटिव सोचते रहेंगे तो नेगेटिव चिन्तन स्वत: ही खत्म हो जाएगा, परन्तु ऐसा नहीं है। जैसे यदि जहर से भरे बर्तन में पानी डाला जाए तो जहर खत्म हो नहीं सकता, वह पानी को भी खराब अथवा जहरीला बना देगा। हम सिर्फ बाबा के बच्चे बनने मात्र से यह नहीं कह सकते कि हमारी नेगेटिविटी खत्म हो गई है। अगर ऐसे नेगेटिविटी स्वत: ही खत्म होती तो बाबा हमें आकर रोज यह नहीं बोलते कि बच्चे, मीठे, प्यारे व शांत बनो और याद से अपने विकर्म दग्ध करो। वो यह भी कह सकते थे कि आप मेरे बच्चे हो और अब आप कमजोरियों से मुक्त हो।

बाबा की समीपता का अनुभव करने के लिए हमें वही करना चाहिए जो बाबा चाहते हैं। कभी ऐसा भी हो सकता है कि सेवा के समय में हम शांत स्वरूप हो बैठे हों। हम सोचते हैं कि मैं तो शान्ति का अनुभव कर रहा हूँ, कोई और यह बोलने की सेवा कर लेगा। बाबा कहते हैं कि बाबा के समीप होने के लिए 3-4 गुणों को विशेष धारण करना चाहिए।

सर्वप्रथम तो उन्हें ज्ञानी तू आत्मा होना चाहिए। कोई भी कार्य करें तो उसके क्या परिणाम होंगे, वो स्पष्ट होने चाहिएँ। ऐसा ज्ञान-

स्वरूप बनने के लिए मुरलियों के अध्ययन की आवश्यकता है। वह कोई कठिन बात नहीं। ज्ञान तो सहज उपलब्ध है। मुरलियाँ पवित्र पुस्तकों की तरह ताले के भीतर बन्द नहीं हैं। बाबा को बुद्धिवानों का बुद्धिवान कहा जाता है तो हमें उनके करीब होने के लिए बुद्धिवान तो बनना ही होगा।

दूसरी बात बाबा कहते हैं कि बाबा को योगी तू आत्मा अति प्रिय हैं, परन्तु योगी तू आत्मा की पहचान कैसे की जाए। योगी आत्माएँ अन्दर व बाहर दोनों प्रकार से ही साफ दिल की होती हैं। जब कोई साधारण व्यक्ति योगी तू आत्मा के सम्पर्क में आता है तो कुछ प्राप्ति का अनुभव अवश्य करता है और स्वयं को पहले से ज्यादा परमात्मा के समीप अनुभव करता है। बाबा कहते हैं कि बच्चे, आपको सहजयोगी बनना है, हठयोगी नहीं। यह केवल योग-तपस्या की बात नहीं परन्तु याद पर ही सारा मदार है, इसी से ही योगी जीवन बनता है। योगी तू आत्मा यानी निर्विकारी, तो अपने आप से पूछना चाहिए कि हम कितने निर्विकारी बने हैं और हमारे जीवन से यह स्थिति कितनी झलकती है? बाबा कहते हैं कि सेवाधारी बच्चे बाबा के बहुत करीब हैं। मुझे याद है एक बार दोपहर को 2:30 बजे मैं मुम्बई से सेवा करके लौटा और सीधा बाबा से मिलने गया। दरवाजा खोलने वाली बहन ने, जो मुझे नहीं जानती थी, कहा कि बाबा आराम कर रहे हैं और तुम अभी नहीं

मिल सकते। परन्तु बाबा अन्दर अर्धनिद्रावस्था में लेटे हुए थे, उन्होंने यह सुन लिया और मुझे आवाज देकर अन्दर आने के लिए कहा। बाबा मुझे बोले कि तुम जब चाहो बाबा से मिल सकते हो क्योंकि बाबा का सेवाधारी बच्चों से बहुत प्यार है।

साकार बाबा से मिलने का व समीप होने का लाभ मैंने 10 वर्षों तक खूब उठाया और आज भी समीपता अनुभव करता हूँ। जो मैं सोचता हूँ, उसकी लेनदेन बाबा से करता हूँ। सेवा में क्या हो रहा है, प्रैक्टिकल में क्या कार्य हो रहा है, क्या-क्या समस्याएँ हैं व व्यक्तिगत समस्या भी बाबा से पूछता हूँ। और उसके बाद बाबा मुझे यह बताते हैं कि क्या करना है, क्या नहीं करना है व कब व कैसे करना है। यह सब मुझे हर वक्त बाबा की समीपता का अनुभव कराता है। बाबा के साथ बिताये दस वर्ष मेरे जीवन में गाइड का कार्य करते हैं और जब भी कोई निर्णय लेना होता है तो मैं यही सोचता हूँ कि बाबा इस अवस्था में क्या करते और फिर बाबा से पूछकर निर्णय लेता हूँ। वह तो सदा पॉजिटिव हैं। वो कभी नहीं बदलते, हम भले बदल जाएँ।

मम्मा व बाबा के साथ के अनुभव

मैंने मम्मा के साथ छह साल व बाबा के साथ दस साल व्यतीत किये। इस दौरान घटनाएँ कैसे-कैसे घटीं, मैं आपको यह बताऊँगा बजाए इसके कि कौन-सी ज्ञान अथवा योग की बातें हुई, यह आप स्वयं सोचना। मैं 1 फरवरी 1959 से शुरू करूंगा क्योंकि इस दिन मैं पहली बार मुम्बई में सेवाकेन्द्र पर गया था। उस समय मैं भारतीय नौ सेना में रेडियो इंजीनियर यानी इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर था। मेरे नौ सेना के मित्रों ने मुझे सेन्टर पर जाने के लिए राजी किया था।

एक घण्टे की खोज के बाद हमें सेवाकेन्द्र मिला। बहनजी ने सोचा कि रात के आठ बजे ये सफेद कपड़े पहन टोपी लगाकर कौन आये हैं? कुछ प्रश्नोत्तर के बाद हमें अन्दर जाने को मिला और एक फॉर्म भरने को दिया गया जिससे अगले दिन से कोर्स आरम्भ किया जा सके।

सोलह वर्ष की युवा कन्या जो दस वर्ष की उम्र में ज्ञान में आ चुकी थी, ने हमें पढ़ाना शुरू किया। उन्होंने बहुत स्पष्ट व प्रैक्टिकल नॉलेज हमें दी। यद्यपि मैं मेडिटेशन कुछ दिनों से करता था व कुछ किताबें भी पढ़ चुका था परन्तु बहनजी ने बहुत ही विवेकपूर्ण और प्रभावशाली तरीके से हमें समझाया। चार दिन बाद जब हम कुछ

ज्ञान प्राप्त कर चुके तो हमें योग करवाया गया। यह योग का अनुभव बहुत ही शक्तिशाली व सुखद था क्योंकि हम तुरंत फरिश्ता स्टेज में पहुँच गये थे।

शुरू में हमें ये अद्भुत-सा लगा कि आँखें खोलकर, योग में भकुटि के बीच में कैसे देखें और मुझे काफी संकोच-सा हुआ परन्तु दो मिनट बाद जब जादुई मंत्र-"मैं एक पवित्र आत्मा हूँ, शान्त स्वरूप आत्मा हूँ व मेरा संबंध परमपिता परमात्मा से है," की पुनरावृत्ति हुई तो मेरा मन बहुत शांत हो चुका था और मेरे लिए यह एक बहुत मीठा अनुभव था। मेरे अन्य मित्र पूरे समय मुँह नीचा करके देख रहे थे। मुझे तो ऐसा लगा कि पूरा कमरा सफेद लाइट से भर गया है। कारपेट भी जो लाल रंग का था, सफेद नजर आने लगा। यह मेरे लिए एक सेमी-ट्रांस का अनुभव था। जिस रीति से उन्होंने परमात्मा का परिचय दिया कि वो कैसे हैं, कहाँ रहते हैं, उनका क्या नाम है, उनका क्या काम है और कैसे इस दुनिया में शांति स्थापन करते हैं, अपूर्व व विचित्र था। ऐसा तो मैंने पहले कभी पढ़ा तक नहीं था।

यद्यपि बहनजी ने हमें ब्रह्मा, विष्णु व शंकर के रोल (भूमिका) के बारे में बताया परन्तु हमें यह स्पष्ट नहीं था कि ब्रह्मा का रोल अभी चल रहा है व प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा प्रैक्टिकल में (स्थापना का

कार्य भगवान द्वारा) करवाया जा रहा है। हमने इसे केवल सैद्धान्तिक ज्ञान की तरह से समझा और चूंकि हमें यह ज्ञान अच्छा लगा इसलिए हम अपने मित्रों को इस ज्ञान को समझने के लिए बुलाते रहे। इस प्रक्रिया में सात दिन का पाठयक्रम पन्द्रह दिन का पाठ्यक्रम बन गया। जब बहनजी ने हमें कहा कि अब वो हमको मुरली सुनायेंगी तो हम जोर-जोर से हँस दिये।

हम लोगों ने कहा कि हमारे में से एक को बंशी (मुरली) बहुत अच्छे से बजानी आती है; ऑल इन्डिया रेडियो पर भी वह वाद्य-संगीत का प्रोग्राम देता है। सो हमने बहन जी से आग्रह किया कि आप ज्ञान समझाने की प्रक्रिया ही जारी रखें। तब बहनजी ने हँसकर कहा कि इस मुरली का अर्थ कोई वाद्य-यंत्र से नहीं बल्कि ज्ञान की बंशी से है जो शिवबाबा ने ब्रह्मा-मुख से हमें सुनायी है। उन्होंने बताया कि मुरली सात दिन का पाठ्यक्रम पूरा कर लेने वाले विद्यार्थी को ही सुनायी जाती है। तब उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा का परिचय देकर कहा कि मुरली के द्वारा इस ज्ञान को पूरी तरह से समझाया जाता है। और इस प्रकार हमने जो पहली मुरली सुनी उसमें बाबा ने साक्षात्कार करने के बाद अपनी स्थिति का अनुभव सभी को सुनाया था।

हमें सेवाकेन्द्र में जाते लगभग चार सप्ताह ही हुए थे कि मम्मा

के वहाँ आने का सौभाग्य हमें मिला। हमें उनकी मुम्बई की यात्रा का पूरा-पूरा लाभ मिल सके, उसके लिए उनके विशेष प्रवचनों का प्रबन्ध करवाया गया।

प्रत्येक शाम 5 से 6 बजे तक मम्मा की क्लास हुआ करती थी। तब हम शिप में जाकर खाना खाते थे और फिर वापस मुरली सुनने के लिए आते थे। उस समय हम लोग सीनियर स्टुडेन्ट की तरह हो गये थे। मुझे यह ज्ञान इतना रमणीक लगा कि मुझे याद है कि मुझे जो कोई भी मिलता था, मैं उससे पूछा करता था कि आपको मन की शांति अनुभव करने की इच्छा है? आप आत्मा व परमात्मा के बारे में जानने के इच्छुक हैं? प्राय: जवाब 'हाँ' ही होता और चूंकि सेवाकेन्द्र पास में ही था, मैं उनको इन्चार्ज बहन जी से मिलवाता था। इस प्रकार एक मास में करीब 40 स्टुडेण्ट हो गये थे और 8 सीनियर स्टुडेण्ट हो गये थे।

ये सब समाचार बाबा को पत्र द्वारा भेजे जाते थे। उन दिनों में डाक-विभाग की सेवा बहुत अच्छी थी। प्रति शाम मुम्बई से पत्र लिखा जाता था और अगले दिन पत्र मधुबन में मिल जाता था। रोज कोई न कोई रेल में जाकर पत्र छोड़ आता था। दूसरी तरफ, बाबा का भी मुरलियों द्वारा पत्र-व्यवहार बहुत अच्छा चलता था।

मम्मा के मुंबई में रहने से हमारी नींव बहुत मजबूत हो गयी ।

मम्मा क्लास सीधा नहीं शुरू करवाती थीं। मुरली के पहले योग हुआ करता था जो अपने आप में एक मधुर अनुभव था। हम लोग मम्मा से पूछा करते थे कि आप हमारे मन के प्रश्नों को कैसे जानते हो। वो कहती थीं कि मैं तो सिर्फ योग में बैठती हूँ और जो भी मेरे मन में आता है उसे बोल देती हूँ।

उन दिनों में, ज्ञान को कैसे समझाया जाए –इसकी ट्रैनिंग मैंने लेना शुरू कर दिया था। मैं देखा करता था कि सेंटर इन्चार्ज बहनें, दादियाँ व मम्मा कैसे ज्ञान समझाती थीं। उन उदाहरणमूर्त शक्तियों को सामने रख मैं विचार-सागर-मंथन किया करता था और धीरे-धीरे मैंने यह सीख लिया।

मुझे योग व ज्ञान की गहराई जानने की बड़ी रुचि थी। ज्योंहि मम्मा वापस चली गईं तो मैंने मधुबन जाने की तैयारियाँ शुरू कर दीं। मैं बाबा को रोज पत्र लिखा करता था। हम दोनों ने आपस में ऐसे पत्र लिखना शुरू कर दिया जैसे कि प्यार होने पर कोई आपस में लिखते हैं। बाबा अपनी कहानियाँ लिख कर मुझे प्रेरित करते थे और मैं बाबा को लिखे बिना रह नहीं सकता था। यदि मैं दो पेज लिखता था तो बाबा मुझे चार पेज लिखा करते थे और मैं यदि चार लिखता तो बाबा छह। बाबा के बारह पेज तक के पत्र भी आये। बाबा के पत्रों में नई मुरलियों के प्वाइंट हुआ करते थे।

छह मास बाद मेरा पहली बार मधुबन आना हुआ। मुझे ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिवबाबा से सन्मुख मिलन मनाना था। यह बाबा से मुलाकात इतनी प्रेरणादायक व प्रभावशाली थी कि मैंने मेरे भविष्य का निर्णय उसी वक्त ले लिया था। बहन जी, जो हमें मधुबन लेकर आयी थीं, यह समझाकर लाई थीं कि जब बाबा पूछे कि पहले कभी मिले हो तो कहना कि हाँ बाबा, कल्प पहले पाँच हजार साल पहले मिले हैं; तभी आपको ज्ञान में पक्का समझा जाएगा, नहीं तो यह समझा जाएगा कि ये ज्ञान में पक्के नहीं हैं। परन्तु मेरे साथ ऐसा नहीं था। मैं तो बाबा से पत्र-व्यवहार व योग में मिल चुका था और अब मिलन की घड़ियों का बेसब्री से इंतजार था। संयोग से बाबा से मिलने के पहले हमारा मम्मा से मिलना हो गया तो मम्मा ने कहा कि यह अनऑफिसियल मीटिंग है, ऑफिसियली तो बाबा से मिलेंगे तब मिलेंगे। अन्ततः हम बाबा से (हमारे साथ एक दोस्त भी था) सन्मुख मिलने पहुँचे।

जब हम बाबा के कमरे में गए तो हमने देखा कि बाबा एक गद्दी पर बैठे हैं और दूसरी तरफ मम्मा बैठी हुई हैं। वहाँ कोई बोलने की बात थी नहीं अतः गहन शांति और बाबा की शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे एकदम अशरीरी बना दिया और मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं इस दुनिया से दूर कहीं जा रहा हूँ। बाबा के मुख-मण्डल से शांति के प्रकम्पन व लाल प्रकाश की किरणें निकलने का मुझे

स्पष्ट अनुभव हो रहा था। यह शक्तिशाली अनुभव किसी भी दुनियावी अनुभव से अलग था।

करीब छह-सात मिनट तक मेरा और बाबा का मन ही मन वार्तालाप चलता रहा। मुझे संकल्प आ रहे थे कि हाँ बाबा, आप अब इस दुनिया को परिवर्तित करने के लिए आ गये हैं। अब तो मैंने आपको साकार में सन्मुख देख लिया है और मेरा यह बाकी जीवन आपको ही समर्पित है। कुछेक क्षणों बाद मुझे ऐसी खींच हुई कि मैं बाबा की गोद में जाकर बैठ गया। बाबा मुरली में कहते भी हैं कि जब तक बच्चे बाबा की गोद नहीं लें, वर्सा प्राप्त नहीं कर सकते। सतयुग का वर्सा तो सभी को मिलता है परन्तु यह मेरे लिए साकार बाबा द्वारा संगम का वर्सा था।

मैं बाबा से मिलकर बेहद खुश था। बाबा ने हमसे पूछा कि क्या यात्रा सकुशल व आरामदायक रही? वास्तव में बाबा क्या बोले–यह महत्त्वपूर्ण नहीं था परन्तु बाबा की आवाज ही सुनने को मन बेहद लालायित था। उन दिनों में टेप रिकार्डिंग व वीडियो जैसे साधन नहीं थे। करीब 25 मिनट बाद बाबा ने कहा कि आप भोजन लेने जा सकते हैं। उस समय केवल छह व्यक्ति बाहर के आये हुये थे व नौ मधुबन की सेवा में थे।

उन दिनों अमृतवेला नहीं हुआ करता था। सुबह 5:45 पर

योग होता था व 6 बजे मुरली शुरू होती थी। क्लास पूरा होने पर हम बाबा व मम्मा से, मम्मा के कमरे में मिलते थे। चूंकि हम बहुत ही कम स्टुडेण्ट थे, हमें रोज बाबा से बहुत ही शक्तिशाली दृष्टि मिल जाती थी। सोचना भी नहीं पड़ता था। हमें सेकेण्ड में नशा चढ़ जाता था। हम लोग खुशियों से नाच उठते थे।

बाद में हम भोजन पर अथवा पिकनिक पर जाते थे। कभी-कभी बैडमिन्टन खेलते थे। बाबा कहते थे कि ईश्वरीय जीवन का यह मतलब नहीं कि सब समय पढ़ते ही रहो, इसका खेल के साथ संतुलन होना चाहिए। शाम को आठ बजे से पौने नौ बजे तक क्लास हुआ करती थी। शुरू में मम्मा वत्सों की रूहानी अवस्था के समाचार पूछती थीं और यह भी पूछती थी कि आपसे कोई गलती तो नहीं हुई? बाबा के आने के पहले करीब 10 मिनट तक मम्मा संबोधित करती थीं।

मैं बाबा से प्रथम बार 1959 में मधुबन में मिला और उसी साल बाबा का मुम्बई आना हुआ। एक सज्जन ने बाबा को एक सुंदर अपार्टमेण्ट, जो मुम्बई के अच्छे इलाके में स्थित था, जब तक चाहें रहने को दिया। इस अवसर पर मैंने नेवी से छुट्टी लेकर कुछ दिन मुम्बई में बाबा के साथ बिताने का निश्चय किया। मैं आपको एक आन्तरिक बात बताता हूँ जो मनोहर दादी बताया

करती थीं। पचासवें दशक के प्रथम वर्षों में यज्ञ आर्थिक रूप से बड़े ही कठिन दौर से गुजर रहा था। और एक दिन ऐसा भी आया कि भण्डारी में सिर्फ पच्चीस पैसे ही रह गए थे। भोजन खाने वाले काफी लोग थे। तो निमित्त बहन ने बची हुई धनराशि के बारे में बाबा को अवगत कराया। बाबा ने तुरंत कहा कि चिन्ता मत करो, केवल ग्यारह बजने तक का इन्तजार करो। ग्यारह बजे डाक आया करती थी। बाबा का विश्वास इतना पक्का था कि वे हमेशा कहा करते थे कि यज्ञ शिवबाबा का है, ब्रह्मा बाबा का नहीं। शिवबाबा ने ही इसको बनाया है, उसी को इसका संचालन करना है, हमको कोई चिन्ता नहीं है। जब डाक आयी तो उस दिन एक हजार रुपया मनीऑर्डर से आया। बाबा ने दिल से शुक्रिया अदा किया उस आत्मा को जिसने ऐसे वक्त में अपने धन को सफल किया।

मुझे याद है कि वह एक बाँधेली बहन थी जो कि मुम्बई में रहती थी। बाबा समय पर सहयोग देने का रिटर्न कई गुणा देते थे। जब उस माता का युगल सुबह घूमने जाता था तो वो बाबा को फोन लगाती थी और बाबा उसे फोन पर मुरली सुनाते थे। कभी-कभी तो 45 मिनट भी फोन पर लग जाते थे। कुछ भाई-बहनें नियमित रूप से इस टेलीफोन क्लास के नोट्स लेते थे। हम सभी भी नोट्स लेते थे। बाबा को आवश्यकता के समय दिये सहयोग

का गहरा अहसास था। जब हर तरह से सम्पन्नता हो तो किसी भी सहयोग का विशेष अहसास नहीं होता परन्तु वो तो एक अलग ही बात थी।

बाबा कहते थे कि बच्चे, जब तक कोई ईश्वरीय सेवा नहीं करो, तब तक आपको नाश्ता नहीं करना चाहिए। तो मैं मुरली खत्म होने के बाद पास के पार्क में सेवा के लिए जाया करता था। एक बार मैंने किसी आत्मा को त्रिमूर्ति के बारे में समझाया, परन्तु जल्दबाजी में गोलमाल करके समझाया। जिसको ज्ञान समझाया, वो क्रिश्चियन थी। उसने ब्रह्मा बाबा की तरफ संकेत करके पूछा कि यह कौन व्यक्ति हैं। मैंने ब्रह्मा, विष्णु व शंकर का परिचय दिया और कहा कि ब्रह्मा के द्वारा परमात्मा नई दुनिया की रचना करते हैं। परन्तु उस बहन की बुद्धि में यह स्पष्ट नहीं हुआ कि यह कार्य अभी ही हो रहा है।

जब मैं वापस बाबा के पास आया तो रोज की भाँति, ज्ञान-चर्चा के दौरान जो हुआ वो बाबा को बताया। बाबा रोज सुनकर, ज्ञान कैसे देना चाहिए, यह हमें समझाते थे। इस बात को मैंने जब बताया तो बाबा ने कहा कि तुम्हें बोलना चाहिए था कि सर्वोच्च परमपिता परमात्मा अब ब्रह्मा बाबा के द्वारा ज्ञान दे रहे हैं और यदि तुम ऐसा कहते तो वह आत्मा बाबा से वर्से का जन्मसिद्ध अधिकार

प्राप्त कर लेती। मैंने बाबा से क्षमा चाही और अगले दिन एक अन्य बुजुर्ग भाई ने जब यही प्रश्न पूछा तो मैंने ब्रह्मा बाबा का स्पष्ट परिचय देते हुए कहा कि अब इन्हीं के द्वारा परमात्मा ज्ञान सुना रहे हैं। फिर उसने पूछा कि वो अभी कहाँ हैं? मैंने कहा कि मुम्बई में ही हैं, तो उस आत्मा ने बाबा से मिलने की इच्छा जाहिर की। मैंने कहा कि बाबा से समय लेकर अगले दिन आपको बता देंगे।

उन दिनों शाम को पाँच बजे सेवाकेन्द्रों पर मुरली चला करती थी। अगले दिन जब वह शाम को बाबा से मिलने आया तो मुरली के पश्चात् बाबा ने उसको पास बिठाया और कहा कि आप भी बाबा की तरह ही हो, एकदम पिता की तरह। बाबा का तन भी पुराना है और आपका तन भी बाबा की तरह पुराना है। साधारणतया गुरु लोग अपने चेलों आदि को पास में नहीं बिठाते, परन्तु बाबा ने उसे पास बिठा कर इस बात का अनुभव करवा दिया कि हम दोनों ही ईश्वर के बच्चे हैं। बाबा ने उसे ज्ञान समझाया और उस दिन से वह रोज क्लास करने आने लगा। इस तरह से बाबा प्रैक्टिकल में कुछ न कुछ नयी शिक्षाएँ देते रहते थे।

बाबा विशेष आत्माओं को विशेष अनुभव करवाया करते थे। एक बार की बात है कि दादी प्रकाशमणि जी व दीदी मनमोहिनी जी पहली बार मुम्बई आए और जिस भाई के साथ आए, वह

अपना जन्मदिन मनाने वाला था। वह आत्मा एक सेवाकेन्द्र खोलने के निमित्त बनी थी इसलिए बाबा उसे एक विशेष अनुभव करवाना चाहते थे। इस अवसर पर एक छोटा-सा उत्सव मनाया गया और बाबा ने सबको इतनी शक्तिशाली दृष्टि दी कि रूहानी नशे से सभी यह अनुभव करने लगे कि मानो सतयुगी दुनिया में पहुँच गये हैं। संयोग से उसी समय मैं वहाँ पहुँचा और मुझे वहाँ का वातावरण मन को छूने वाला लगा। सभी नाच रहे थे। दीदी जी ने आकर मेरे हाथों को ऐसे पकड़ा जैसे किसी छोटे बच्चे के साथ खेल रही हों। हम लोग कुछ देर तक इसी तरह खेले, परन्तु मुझे उस समय यह अहसास हो गया था कि यह कोई खेलपाल मात्र नहीं है वरन् इसमें इससे ज्यादा गहरी बात छिपी है। बाबा अपने बच्चों पर कैसे प्यार की बरसात करते हैं, यह हमारी कल्पना से ऊपर है और यह केवल ईश्वरीय संतान बनने से ही समझ में आ सकता है। पूरे खेलपाल में बाबा अनासक्त भाव धारण किये हुए एकदम न्यारे परन्तु प्यारे ही दिखाई दे रहे थे। बाबा ड्रामा को कैसे अनुभव करते हैं, मेरे लिए देखने का एक सुंदर दृश्य था। इस अनोखी रूहानी पालना से वह निमित्त आत्मा इतनी प्रभावित हुई कि आगे चलकर मधुबन के विस्तार के निमित्त बनी।

ये चालीस दिन जो मैंने बाबा के साथ व्यतीत किये, मेरे लिए एक नौसीखिए की तरह से थे। प्रत्येक दिन ही विशेष था जिसमें मैं

कोई न कोई नयी बात सीखता ही था। बाबा जब मधुबन लौट गए तो मैंने दो मास की वार्षिक छुट्टी ली। मैंने यह सोच लिया था कि ये छुट्टियाँ मैं लौकिक परिवार में जाकर गपशप करने में नहीं बिताऊँगा, क्योंकि संगम की हर घड़ी बहुत महत्त्वपूर्ण है और समय को बाबा की सेवा में सफल करना चाहिए। मैंने बाबा को लिखा कि मैं दो मास के लिए फ्री हूँ, आप मुझे सेवा के लिए कहीं भी भेज सकते हैं। साथ ही यह भी लिखा कि मैं एक सेवाकेन्द्र खोलना चाहता हूँ। बाबा जानते थे कि यदि यह कोई सेवाकेन्द्र खोल लेगा तो बंध जाएगा, तो बाबा ने लिखा कि सेवाकेन्द्र खोलने की चिन्ता मत करो। यह कार्य तो अन्य लोग भी कर लेंगे। तुम केवल उनकी संभाल करो जो पहले से खुले हुए हैं। मुझे अब यह अनुभव होता है कि बाबा मेरे भविष्य के बारे में जानते थे और मुझे बंधन-मुक्त रखना चाहते थे।

मैंने अपने लौकिक कार्य का इस तरह से प्रबन्धन किया कि मैं सप्ताह में एक दिन व सप्ताह के अंत में अलौकिक सेवा के लिए फ्री रहता। बाबा समाचार-पत्रों की सेवा करने की बहुत युक्ति बताया करते थे इसलिए मैंने इस छुट्टी के समय समाचार-पत्रों के दफ्तरों में जाकर वहाँ के लोगों से दोस्ती करना शुरू कर दिया। शनिवार को हम लोग पार्क व पर्यटन की विशेष जगहों पर पर्चे बाँटने जाते थे। रविवार को हमें भक्त आत्माओं की सेवा के

लिए मन्दिरों में जाना होता था। बाबा कहते थे कि शिव, कृष्ण व लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में हमें दैवी घराने की आत्माएँ मिल सकती हैं। धीरे-धीरे मुझे ऐसा लगने लगा कि मुझे इतना ही नहीं परन्तु पूरा ही समय ईश्वरीय सेवा में देना चाहिए।

उन छुट्टियों में मेरा सेवा के निमित्त जयपुर जाना हुआ। यह अपने आप में एक श्रेष्ठ अनुभव था। लौटते वक्त मैं मम्मा व बाबा से मिला और मैंने लौकिक कार्य छोड़ने की इच्छा जाहिर की; जिससे कि मैं पूरा ही समय ईश्वरीय सेवा में दे सकूँ। मम्मा ने कहा कि यह बहुत अच्छा ख्याल है। एक व्यक्ति को जीवन में चाहिए ही क्या? दो कपड़ों के जोड़े व दो समय भोजन, जो यज्ञ से मिल सकता है।

मैंने 1963 में नेवी छोड़ने का आवेदन दिया। मैं सोचा करता था कि नेवी वाले मुझे क्यों जाने देंगे। चार साल का प्रशिक्षण प्राप्त मैं अनुभवी इलैक्ट्रोनिक इंजीनियर था। परन्तु बाबा ने मुरली में कहा था कि यदि आप रोजाना आठ घण्टे योग करते हो तो आप अपने कर्मों के हिसाब-किताब को पूरा चुक्तू कर सकते हो। मैंने इसका प्रयोग शुरू किया और चूंकि मैं एक मास के लिए फ्री था, मैंने रोज सुबह आठ से बारह बजे तक व शाम को चार से आठ बजे तक योग लगाना शुरू कर दिया। यद्यपि मैं उन दिनों सेवाकेन्द्र

से दूर था, परन्तु मुझे ये सब करने के लिए पर्याप्त समय था। दोपहर के समय मैं मुरली को अन्य भाषाओं में लिखकर बुजुर्ग माताओं को मदद करता था। इस प्रयोग का मुझे सुखद फल मिला और मुझे नेवी से छुट्टी मिल गई। नौकरी छोड़ने के बाद करीब तीन मास तक मुझे बाबा के अंग-संग रहने का अवसर मिला और साथ ही साथ दादा विश्वकिशोर से समय प्रति समय मार्गदर्शन मिलता रहा। पहली बार बाबा ने मुझे एक लेखन कार्य की अंग्रेजी भाषा चैक करने के लिए कहा, जो छपने जाने वाला था। मैं तो विस्मयाकुल-सा हो गया। मैं अपने आप को इतना अपरिपक्व समझ रहा था कि ऐसा कुछ करने में भय-सा लग रहा था। मैंने दादा विश्वकिशोर को यह बताया। उन्होंने कहा कि एक की भेंट में दो हमेशा अच्छे हैं और आपको इसे देखना चाहिए। इस तरीके से धीरे-धीरे प्रिंटिंग का कारोबार एक-एक करके मुझे समझाया गया और मैं चित्रों की कला भी सीख गया। सन् 1959 से 1963 तक का समय मैंने एक रूहानी नौसीखिए की तरह बिताया।

इन्हीं दिनों वी.आई.पी. सेवाओं की शुरूआत हुई। उन दिनों राजनीतिज्ञों के चारों तरफ इतनी कड़ी सुरक्षा नहीं होती थी। मेरी पंडित जवाहर लाल नेहरू, मुम्बई के गवर्नर व अन्य कई मंत्रियों से मुलाकात हुई। हम लोग कहीं भी, किसी के पास भी निमंत्रण लेकर बिना किसी भय व संकोच के चले जाते थे और बाबा हमें

इसकी प्रेरणा देते रहते थें।

बाबा ने मुझे समाचार-पत्र पढ़ने को कहा। मैंने बाबा से इसका कारण जानना चाहा, क्योंकि मेरे लिए मुरली ही पर्याप्त थी। तब बाबा ने कहा कि यह सेवा के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि देश-विदेश से जो नामीग्रामी लोग आते हैं, वो कहाँ रुके हुए हैं और उन्हें कैसे बाबा के ज्ञान का साहित्य दिया जा सकता है, इसको जानने में इससे मदद मिलेगी।

बाबा विशेष अवसरों पर अक्सर सौगात दिया करते थे। यही वजह है कि आज भी मधुबन में कोई आता है तो सौगात अवश्य प्राप्त करता है। एक समय की बात है कि एक बहन अपने युगल के साथ बाबा से मिलने मधुबन आई। यद्यपि वो भाई उस बहन को विशेष सहयोग नहीं देता था फिर भी युक्ति से वह उस भाई को बाबा के पास मधुबन ले आई थी। बाबा उस भाई से मिले और जो लक्ष्मी-नारायण का चित्र सौगात के लिए बनाया गया था, वो दिखाया। अपनी ठोडी के नीचे चित्र को बड़े प्यार से पकड़कर बाबा समझाते हुए बोले– " मीठे बच्चे, बाबा आप साधारण बच्चों को लक्ष्मी-नारायण जैसा पूज्य बनाने आए हैं। क्या तुम ऐसा बनना चाहोगे ?"

उसने जवाब दिया–"हाँ बाबा, आप मदद करेंगे तो मैं अवश्य

बन जाऊँगा।''

बाबा ने कहा–''केवल इसी लिए बाबा आए हैं, परन्तु इसके लिए आपको पवित्रता की शपथ लेनी पड़ेगी, क्या आप लेंगे?'' उसने कहा–''हाँ बाबा, मैं अवश्य लूँगा।'' बाबा ने तुरंत राखी मँगवाई और एक बहन ने उसको पवित्रता की राखी बाँध दी। उसके बाद बाबा ने लक्ष्मी-नारायण का चित्र सौगात में दिया। ये भाई और उनकी युगल अभी भी मधुबन में आते हैं और कहते हैं कि उसके बाद उनके जीवन में पवित्रता की धारणा सहज ही हो गयी।

बाबा ने मुझे एक बार लक्ष्मी-नारायण के चित्र बनाने का काम दिया था और बाबा ने जितना समय दिया था, उससे कुछ ज्यादा समय इस कार्य में लग गया। चित्र को एकदम सही-सही बनाना था इसलिए कई प्रकार की सूक्ष्म चैकिंग के बाद उसे बनाया गया तो कार्य धीरे हुआ। बाबा से मुझे पत्र प्राप्त हुआ। बाबा ने सदा की तरह बहुत प्यार से पत्र लिखा, परन्तु थोड़ा कान खींचते हुए लिखा कि बच्चा बहुत स्लो (धीमा) है। दादीजी भी इस काम में निमित्त थीं। दादीजी के लिए बाबा ने लिखा कि निर्वैर के साथ तुम भी स्लो हो गई हो।

शुरू में समाचार-पत्रों के द्वारा संदेश देना एक अच्छा साधन

था, परन्तु बाद में समाचार-पत्र उल्टा-सीधा समाचार भी छापने लगे। मुझे याद है कि एक विशेष कहानी के बाद बाबा ने प्रेस से मिलना ही बंद कर दिया। फिर भी बाबा ने चाहा कि हम लोग उनकी सेवा जारी रखें। मेरा एक पत्रकार (editor) से परिचय था जो बाबा से मिलना चाहता था। मैंने उसे मुम्बई में जिस सेवाकेन्द्र पर बाबा आने वाले थे, वहाँ बुलाया। उसके आने की इत्तला जब बाबा को दी तो बाबा ने एक बार तो मना किया, परन्तु बाद में पाँच मिनट का समय दिया। जब उसे मिलने के लिए बुलाया तो बाबा नीचे आँगन में बैठे हुए थे। बाबा केवल ब्रह्मावत्सों की सभा में ही गद्दी पर बैठते थे। दूसरों को समानता का भाव अनुभव कराने के लिए पास में बिठाते थे। इस मुलाकात में भी यही हुआ। जो पत्रकार मिलने आया था, उसने बाबा को इतना सम्मान दिया कि यह मुलाकात लगभग चालीस मिनट चली।

मधुबन आने के बाद मुझे आवास-निवास के व अन्य इमारतों के नये प्रोजेक्ट्स को संभालने का अवसर मिला। मेरा मुख्य वास्ता नक्शे बनाने वालों से व इंजीनियर्स से ही पड़ता था। निर्माण की जितनी भी योजनाएँ हम बनाते, हमें ऐसे ही लगता कि इससे भी ज्यादा और बनाना है। मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि मधुबन आकर मैं इन सब कार्यों के निमित्त बनूँगा। बहुत बार ऐसा होता है कि हम अपने अन्दर छिपी कुशलता को नहीं जानते हैं, परन्तु बाबा

हमसे वो काम अच्छी तरह करवा लेते हैं। जैसे-जैसे हमारा समर्पण भाव बढ़ता जाता है, बाबा हमसे कार्य सहज ही करवा लेते हैं। मुझे याद है कि उन दिनों में मैं अव्यक्त बापदादा की वाणी को अन्य भाषाओं में अनुवाद करता था, बाबा रात को काफी देर तक भी मुरली चलाते थे, परन्तु ऐसे वाइब्रेशन होते थे कि कभी भूख तक भी नहीं लगती थी। शाम का भोजन किए बिना ही रात को बड़ी खुशी से बैठा करते थे। उन दिनों में मैंने देखा कि बाबा कैसे एक-एक आत्मा को संतुष्ट एवं खुश करते हैं। बाबा ज्योंहि हर आत्मा की बात सुनते, आत्मायें खुशी से नाच उठती और हल्की हो जाती। इस प्रकार यद्यपि मधुबन आने के बाद मैं मुख्य रूप से नव-निर्माण के प्रोजेक्ट्स में लगा हुआ रहा फिर भी मेरी प्रथम रुचि योग के द्वारा अनुभव करने की ही रही।

जब से मैं मधुबन में हूँ, मुझे यह करीब से देखने का सौभाग्य मिला है कि कैसे दादीजी ने बाबा से जिम्मेदारी ली और कदम-कदम बाबा से श्रीमत ली। जब पहली बार 21 जनवरी, 1969 को अव्यक्त बापदादा आए तो बाबा ने कहा कि शरीर को छोड़ना मात्र कमरा बदलने के बराबर है। बाबा ने कहा कि बाबा बच्चों की सेवा में अभी भी उपस्थित हैं, जैसे पहले थे और यह कभी नहीं सोचना है कि बाबा चले गए हैं। बाबा ने हमें यह विश्वास दिलवाया कि जब तक संगम है, बाबा साथ है, केवल बाबा के रूप का परिवर्तन हुआ

है। बाबा ने कहा कि जब भी हम बाबा के कमरे में बाबा की ट्रांसलाइट की तरफ देखेंगे तो हमें यह अहसास होगा कि साकार बाबा हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

मुझे एक बार पूछा गया कि क्या आपको कभी भी ऐसा लगा कि बाबा को अपना जीवन समर्पण करके कोई भूल कर दी! तो मैंने कहा कि नहीं, कभी नहीं। मुझे इस बात का दिल से बहुत गर्व है कि बाबा ने मुझे सेवाओं के काबिल समझा और मैं समझता हूँ कि हर ब्राह्मण भाई-बहन की ऐसी ही भावना होगी।

हमारे अलौकिक परिवार के कार्यों में और बाकी दुनिया के कार्यों में बहुत बड़ा फर्क है। हमें इस बात का स्पष्ट अनुभव होना चाहिए कि यह कोई साधारण मनुष्यों का कार्य नहीं, परन्तु स्वयं शिवबाबा ईश्वर का कार्य है।

हमारा संबंध उस ईश्वरीय परिवार से है जो समाज के महानतम व सर्वश्रेष्ठ कार्य के प्रति प्रतिबद्ध है और हम उसमें निमित्त हैं। यदि हमारे अन्दर इस प्रकार का स्वमान जाग्रत रहेगा तो संगम की हर घड़ी सुखदायी बन जाएगी।

मुख्य बात है कि मन से बाबा के आगे संपूर्ण समर्पण अर्थात् जैसे बाबा चाहें वैसे हमारे संकल्प हों, वैसी हमारी बुद्धि हो और

वैसे ही हमारे संस्कार। यही है सबसे सुंदर अनुभव जो हम कर सकते हैं।

जीवन में कुछेक बातें ऐसी होती हैं जो आपकी उम्मीदों से भी परे हो जाती हैं। जब हम कोई सेवा की योजना बनाते हैं तो उसकी भी कुछ सीमाएँ होती हैं परन्तु जब बाबा के निर्देशन में बनाते हैं तो वे बेहद की हो जाती हैं।

इस प्रकार से हम अपने आप को केवल एक अलौकिक परिवार के सदस्य ही नहीं बल्कि उस संगठन का हिस्सा अनुभव कर सकते हैं जो इस धरा पर स्वर्ग लाने के निमित्त है।